॥ संवित् संकीर्तन सार ॥

रचयिता एवं संकलन
स्वामी ईश्वरानन्द गिरि

प्रकाशक
संवित् साधनायन
सन्त सरोवर, आबू पर्वत

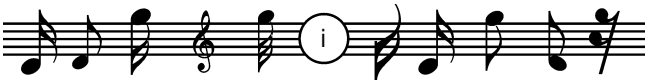

संपर्क :
संवित् साधनायन
सन्त सरोवर, माउण्ट आबू
राजस्थान – 307 501 (भारत)
फोन : 97245 97777

© प्रकाशक

प्रायोजक :
श्रीमती उमादेवी गिरधारीलालजी सराफ परिवार, अहमदाबाद

सप्तम संस्करण :
''श्री अष्टमूर्ति यतीश्वर महादेव मन्दिर'' प्रतिष्ठा महोत्सव
24 नवम्बर, 2021, ईश्वराश्रय आश्रम, उड़वरिया,
काछोली, राजस्थान

मूल्य : ₹ 100/-

मुद्रक :
गिरीराज प्रिन्टर्स, अहमदावाद

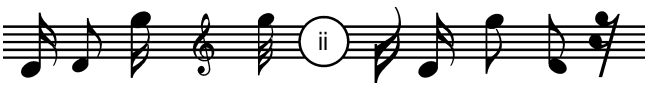

पुण्य स्मृति

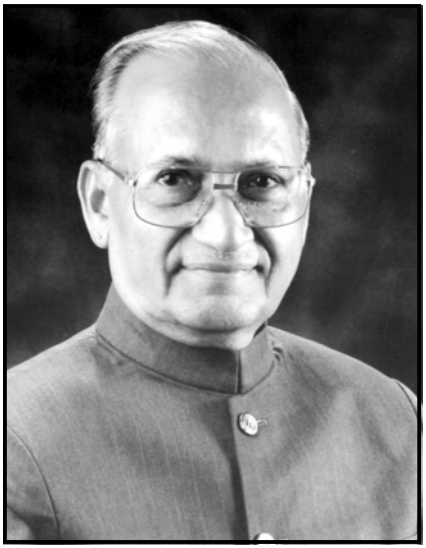

स्व. श्री गिरधारीलालजी रामगोपालजी सराफ

स्व. श्री गिरधारीलालजी सराफ की पुण्य स्मृति में
श्रीमती उमादेवी गिरधारीलालजी सराफ
एवं परिवार द्वारा यह प्रकाशन समर्पित है ।

प्रकाशकीय

सन् 1985 में संवित् साधनायन, आबू पर्वत द्वारा प्रकाशित ''संवित् संकीर्तन सार'' के आमुख में पूज्य श्री स्वामीजी महाराज ने लिखा था :-

''संवित् साधनायन द्वारा सन 1977 में 'संवित्नाम सुधावल्लि' का प्रकाशन हुआ था । उसमें संवित् के अष्टोत्तरशतनामों की व्याख्या के परिशिष्ट रूप से कुछ कीर्तनों का संकलन दिया गया था जो कि विशेषतया संवित् साधकों के लिये रचे गये थे। इन कीर्तनों का प्रचुर और रसमय प्रयोग सभी संवित् सत्संगों में हुआ और हो रहा है। प्रत्येक विशिष्ट उत्सव या आयोजन पर नये कीर्तनों का समावेश भी सहजतया होता आया । यह प्रवृद्ध कीर्तन साहित्य सभी साधकों को सरलतया उपलब्ध हो इस दृष्टि से केवल संवित् संकीर्तनों का यह संग्रह मुद्रित हो रहा है। पूर्व प्रकाशन में विद्यमान त्रुटियों का इसमें निवारण भी कर दिया गया है। पुराने कीर्तनों के क्रम में कुछ परिवर्तन भी है। अब यह कीर्तन-समूह अपने आप में एक अमोघ साधना के रूप में साधकों के सामने आ रहा है।

संकीर्तन साधना पर भक्ति सम्प्रदाय के आचार्यों ने बहुत जोर दिया। पर यह कहना सर्वथा असंगत होगा कि ज्ञान साधना में कीर्तन का कोई स्थान नहीं। दक्षिणा-मूर्ति स्तोत्र नामक लघु पर अत्यन्त वरिष्ठ शुद्ध वेदान्त प्रकरण ग्रन्थ की अपनी अनुपम रचना के अन्त में आचार्य श्री शंकर कहते हैं ''**तेनास्य**

श्रवणात्- तथार्थ मननात् ध्यानाच्च संकीर्तनात्... इस स्तोत्र का श्रवण, मनन, ध्यान और संकीर्तन करने से ही सर्वात्मभाव रूपी पूर्णफल प्राप्त होता है।'' उपनिषद् में एक जगह प्रश्न उठाया कि ज्ञान प्राप्ति के अनन्तर सिद्ध पुरुष क्या करता है? और उत्तर भी दिया कि वह सामगान गाता रहता है-''मैं अन्न हूँ, मैं अन्नाद हूँ''। इस सामगान में सर्वात्मभाव का सरस प्रकटन है। यह सर्वविदित है कि किसी भी स्तर में, चाहे वह अबोध बालक का क्यों न हो, निष्कल्मष, विकुण्ठित आत्मभावाभिव्यक्ति का सहज माध्यम बनता है गान। भारतीय संस्कृति में गान कला को इस प्रकार सूक्ष्म व सुसज्जित किया कि उसको नादब्रह्म साक्षात्कार की उत्तम साधना के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। अतः स्वर-ताल-भाव के संस्कृत, संयमित व सरस प्रयोग से साधक को अमूल्य अध्यात्मलाभ व सात्विक सुख की प्राप्ति अवश्य होगी।

वर्तमान संग्रह में सभी संकीर्तन सामूहिक साधना के लिये ही प्रस्तुत किये गये हैं। इस शैली में एक व्यक्तिकीर्तन का नेतृत्व करता है और अन्य सभी उसका अनुवर्तन करते हैं। जहाँ कीर्तनोपरान्त धुन की प्रवृत्ति है, उसमें पूर्व ध्वनि, कीर्तन-नेता करता है तो शेष साधक उत्तर ध्वनि को गाते है। लय और ताल की चढ़ती उतरती तीव्रता को यदि ठीक संचालित करें तो इस प्रणाली से विशेष भावोद्रेक का वातावरण बनता है।

इस प्रकाशन में सन्दर्भानुसार रचित विशुद्ध संवित् कीर्तनों

के साथ कुछ महत्वपूर्ण पर अप्रसिद्ध भजनों को भी संग्रहित किया है और कुछ राष्ट्र-गीत वांछित परिवर्तनों के साथ तरु साधकों के प्रयोगार्थ लिये गये हैं। सुविधा के लिये विषयानुसार कीर्तनों के विभागों का निर्देश है। कुछ साधकों की मांग थी कि इस संग्रह में अधिकांश कीर्तन संस्कृत भाषा में होने से उनकी दुर्गमता परिहारार्थ उनका हिन्दी अनुवाद भी देना चाहिये। परन्तु इसमें प्रकाशन का कलेवर बढ़ने का भय था। अतः हम साधकों से आशा करते हैं कि वे गूढ़ संकीर्तनों के अर्थ को स्वाध्याय सत्संग द्वारा समझने का प्रयास करेंगे।.."

हमें प्रसन्नता है कि साधकों ने गत कई वर्षों में इस प्रस्ताव को पूर्ण मनोयोग से अपनाया। हर संवित् सत्संगों में इन कीर्तनों का सफल प्रयोग होता रहा। विशेष करके संवित् साधनायन से निकल कर स्वामी श्रीमत् सद्योजात शंकराश्रमजी ने कर्नाटक के शिराली स्थित चित्रापुर मठ के अधिष्ठाता पद को स्वीकार करने के बाद इन संवित् संकीर्तनों का देशभर के सारस्वत साधक समुदाय में प्रचार किया। फल स्वरूप सन् 1994 में प्रकाशित दूसरा संस्करण भी समाप्त हो गया। संकीर्तनसार की बढ़ती हुई माँग को देखकर सारस्वत साधकों ने इसको पुनः प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा। इसकी स्वीकृति देते हुए पूज्यश्री ने पूर्व संस्करण के कुछ कीर्तनों को संशोधित किया और अनेक नूतन कीर्तनों का समाविष्ट किया। श्रीयुत श्यामसुन्दर चन्दावरकर एवं अनेको सारस्वत साधकों के प्रयास

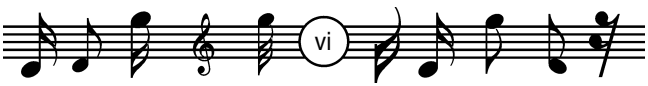

से सन् 2002 की गुरु पूर्णिमा पर नूतन संस्करण का लोकार्पण हुआ था । तत्पश्चात् ''संवित् संकीर्तन सार'' के कई संस्करण प्रकाशित हुए । साधकों की अत्यधिक माँग के कारण आज इसकी प्रतियाँ अनुपलब्ध हैं । एतदर्थ संवित् साधनायन इसे पुनः प्रकाशित कर रहा है ।

श्री गिरधारीलालजी सराफ के लिये पूज्यश्री ''दिव्यानुसंधान'' में लिखते हैं - ''कर्णावती में संवित् सत्संगों को प्रारम्भ करनेवाले गिने-चुने सज्जनों में से श्री गिरधारीलाल सराफ एक थे ।... ''न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'' सिद्धान्त को उन्होंने चरितार्थ किया ।''

ऐसे वरिष्ठतम संवित् साधक की पुण्य स्मृति में यह संवित् साहित्य प्रकाशित हो रहा है जिसके प्रायोजक श्रीमती उमादेवी गिरधारीलालजी सराफ हैं । आपके प्रति संवित् साधनायन विशेष आभारी है । पुस्तक कवर के आर्टवर्क के लिये श्री अश्विनी व्यास के प्रति हम आभारी हैं ।

हमें विश्वास है कि यह साहित्य संवित् साधना के लिये अत्यन्त उपयोगी उत्कृष्ट सामग्री सिद्ध होगी ।

परम पूज्य श्री स्वामीजी महाराज के चरणकमल में कोटिशः नमन ।

श्री अष्टमूर्ति यतीश्वर महादेव मन्दिर प्रतिष्ठा **प्रकाशक**
24 नवम्बर, 2021
ईश्वराश्रय आश्रम, उड़वरिया, काछोली

अनुक्रमणिका

विषय विन्यास	पृष्ठ
प्रकाशकीय	iv
दीप मेरे	xvi
मंगलाचरण	1
उपक्रम भजन	
गुरुशरण	2
गायत्री गान	3
गुरुकीर्तन	
श्रीदक्षिणामूर्ति प्रार्थना	5
प्रातः सायं प्रार्थना	6
ओम् नमो नारायणाय गुरवे मंगलम्	7
गुरुः शरणम्	9
सच्चिदानन्दगुरु	10
गुरुचरणमतिकरुणम्	11
गुरुमहिमा	12
चरण युगल पर	13
गुरचरणन मन लागा	14
दिव्य सिद्ध नर तनुधारी	15

गुरु आये बादल बन 17
सकलसुकृत के स्रोत 18
श्रीगुरुपरंपरा की जय हो 20
वेदव्यासं भजे 21
व्यासो विजयते 22
भज गुरु नाथम् 23
विश्व मूल से 24
वन्देहं गुरु शंकर चरणम् 25
पार्थ सारथे भुवन गुरो 26
नारायण गुरु नारायण 27
जोगी नगर आया 28
आया सद्गुरु आया 30
श्री संविद्गुरुराजराजपद 31
जयतु जयतु यति पूजित चरणं 32

शिव कीर्तन

पाहि शिव पाहि शिव 33
दिनकर हिमकर 34
साम्ब सदाशिव 35
महादेव महादेव 36
महादेव शरणं 37

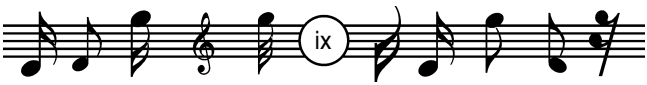

जय मृत्युञ्जय हर	38
अचलेश्वर शिव	39
भज ध्यानैकनिरत	41
मिहिरज मरणद	42
हे पञ्चवदन हिमगिरि	43
जगतः पितरौ वन्दे	44
शिव के समान	45
हिमगिरि के इक	46
सोमनाथं भज	48
भज सोमनाथं भज सोमनाथं	50
ज्योतिर्मयं लिंग	51
रामेश्वर जय	52
नगराजकिशोरी रमण	53
अरुणाचल शिव	54
श्री सोमेश्वर प्रभास संभव	55
सोमनाथो मल्लिनाथः	57
जय सोमनाथ प्रिय स्वप्रकाश	58
त्र्यम्बकेश्वर हे त्रिपुरारि	59
त्र्यम्बकेश ज्योतिर्लिंग	60
मेधादक्षिणामूर्ति जय स्तोत्रम्	61

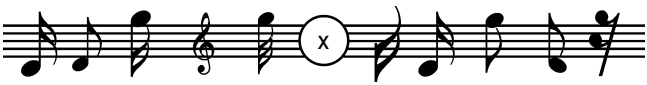

क्षमा करो शिव 62
ॐ नमः शिवाय देशिकाय मंगलम् 63
चलो मन मल्लिकार्जुन-शिव मन्दिर 64
साम्बं भज 65

शक्ति कीर्तन

ॐ शक्ति ॐ 66
उदयाचल नभ 67
भासुरा श्री भवानि 69
विश्वमयि शिवशक्तिमयि 70
जयति संवित् स्वामिनी 71
सन्ततमन्तर भज त्रिपुराम्बाम् 72
जननी शिवजाया 73
पूर्णकलामयि 74
संविदेव हि देवता मम 75
जय जय देवि दया लहरी 76
पाहिमाम् पाहिमाम् परा संवित् 77
हिमाद्रि तनया 78
जयतु जयतु जगजननी 79
अम्बा भवानी अर्बुदा 80
अर्बुदवासिनी अम्बा 82

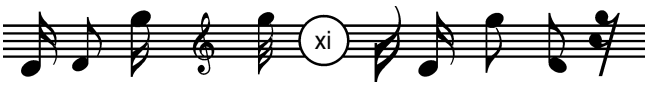

अम्बा तू अधर देवि 84
जय हो जय हो जय हो माँ तेरी 86
माँ तू प्रेम सुधा बरसादे 87
नवरात्री श्री जगदम्बा 88
दुर्गे दुर्गतितारिणि जय जय 91
शरत् चंद्रिके पराशक्ति 92
शांभवमूर्ति कामाक्षी 93
श्री जगदम्बे सरस्वति 94
नारायणि नमोस्तु ते 96
हंसवाहिनी देवी अम्बा सरस्वती 97
जयति गिरिराजेश्वरी 98
गिरिराजेश्वरी सुप्रभातं 99
जागृही जननि 100
पराशक्ति जननी अम्बा 101
सकलभुवन – व्यापिनी संविदम्बा 102
जय जय गिरि राजेश्वरी माँ 103

हरिकीर्तन

ध्येयो नारायणः सदा 104
अयोध्यावासी राम 106
जय मधुसूदन 108

जय जय राम जय रघुराम 110
नारायण नारायण जय श्रीराम हरे 111
राम राम जय जय राम 112
नमामि रघुनाथं 114
खेलति मम हृदये 115
मरकत मणि श्याम 116
राम राम राम राम रामनाम तारकम् 117
गोविन्द गोविन्द मुरहर 118
मन एक बार हरि बोल 119
मुरहर गिरिधर 120
श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् 122
व्रज बालकृष्ण नन्दलाल 124
श्रीगीताचार्यं भजाम्हम् 125
आज सखी सुन 126
श्रीराधेगोविन्दा गोपाला 128

विविध देवता कीर्तन

गणेश कीर्तन 130
जय श्री गणेश 131
गजानन जय षडानन 132

गणपति प्रियगौरी के 133
गणेश जिनका नाम है 134
आञ्जनेय आञ्जनेय नमो भगवन्त 136
आञ्जनेय स्वामी 137
रक्षे मा चल 138
तुंग तरंगे गंगे 139
गंगे गंगे हर हर गंगे 140
शर्मदे वर्मदे 142
ज्योतिषां ज्योतिरेका 144
योगेश्वर का गुरु वेश मधुर 146
भगवद्गीता ज्ञान प्रवाह 148
जाने क्या जादू भरा 149
भगवद्गीते भवभय हारिणि 150
जय सूरज सब के 151
अर्बुद के उन्मुक्त गगन में (ध्वजगान) 153

साधना कीर्तन

नवं नवं देवोवनं 154
आओ सच्चे साधकों सी 155
तन्मय हो जा मेरे मन 157

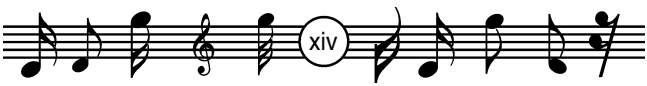

संवित् साधक बनेंगे हम 159
धीर बनो वीर बनो 160
बढते जाना 162
हम नवयुव युग के निर्माता 164
यह हिमालय से भी ऊँचा 165
भगवद्गीता माता के 166
भज मन गोविन्द 168
कृष्ण गोविन्द गोपाल 171
तद्वज्जीव त्वं 172
जब नाव जल में छोड़ दी 173
गात्र वीणा नाद से 175
चिन्ता नहि नहि रे रे रे मन 176
शत शत दीप जले 177
प्रज्ज्वलित करो 179

उपसंहार भजन

आनन्द लोके 180
कोटि कोटि शत प्रणाम तुमको 181
जय गुरुदेव दयानिधि 183
अन्तर मम विकसित करो 185
ध्यान श्लोक 186

विशेष गान

दीप मेरे

दीप मेरे चल अचंचल ॥

सृष्टिमूल से प्रकट होकर
बुद्धि में तुम ''अहं'' ज्वाला ।
भद्रयात्रा पूर्ण करने
विश्व को करो दीप-माला ॥ १

तड़ित से आँखें न स्थगित
तम से नहीं हो मन विचलित ।
लक्ष्य दृढ़ कर हर कदम पर
दीप मेरे जल अकंपित ॥ २

धीर हो सुन आंधी प्रलय
गा रहे हैं तेरा मंगल ।
परम प्रेमास्पद बुलाता
दीप बन जा स्वयं उज्ज्वल ॥ ३

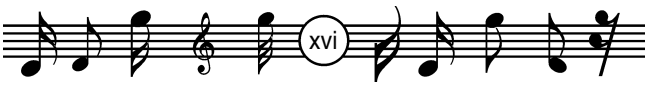

मंगलाचरण

मंगलं दिशतु मे विनायको
मंगलं दिशतु मे सरस्वती ।
मंगलं दिशतु मे महेश्वरी
मंगलं दिशतु मे सदाशिवः ॥१॥

मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुड़ध्वजः
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥२॥

नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेः योगत्रयं पावनं
यत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवनं शक्तित्रयं संविदः ।

प्रस्थानत्रितयं पराक्षरमयं मात्रात्रयं श्रीगुरोः
औघानां त्रितयं परं प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥३॥

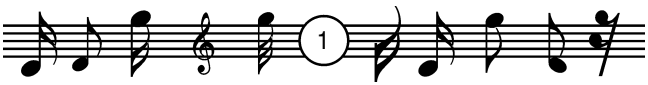

उपक्रमभजन

गुरुशरण

सद्गुरु चरणं चिद्गुरु चरणं
संवित् गुरु चरणम् कुरु शरणम्
शरणं शरणं स्वीकुरु शरणम्
शरणं शरणं श्रीगुरुः शरणम् ॥ ध्रुवपद ॥

सकलविघ्नहरणं गुरुचरणम्,
साधनपथभरणं गुरुचरणं,
स्वात्माविष्करणम् गुरुचरणम् (सद्गुरु) ॥१॥

समस्त तमहरणं गुरुचरणं,-
समाधिसुखकरणं गुरुचरणं,
स्वानन्द वितरणं गुरुचरणम् (सद्गुरु) ॥२॥

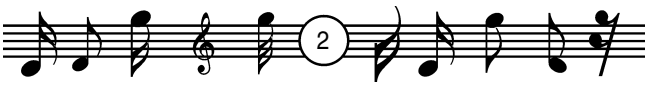

गायत्री गान

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१॥

ऐं ऐं ऐं एकदन्ताय विद्महे
वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥२॥

ॐ ॐ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे
महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥३॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं महादेव्यै च विद्महे
चितिशक्तयै च धीमहि
सा नः संवित् प्रचोदयात् ॥४॥

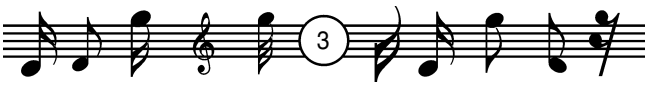

क्लीं क्लीं क्लीं नारायणाय विद्महे
वासुदेवाय धीमहि
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥५॥

श्रीं श्रीं श्रीं तरुणार्काय विद्महे
संवित् सूर्याय धीमहि
तन्नो रविः प्रचोदयात् ॥६॥

ऐं ह्रीं श्रीं पुरुषोत्तमाय विद्महे
भैरव भावाय धीमहि
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥७॥

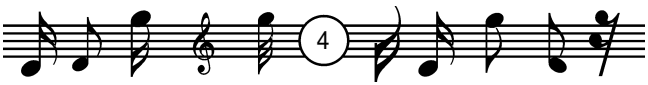

गुरुकीर्तन

श्रीदक्षिणामूर्ति प्रार्थना

दक्षिणामुखमाश्रये, धृतचिन्मुद्रं विमर्शये ।
हे विश्वगुरो त्वां भजे, मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ मे ॥
दक्षिणामुखमाश्रये मौनव्याख्यां विमर्शये ।
हे देशिकेश दयानिधे, संवित् दीक्षां प्रयच्छ मे
सर्वात्मत्वं प्रयच्छ मे ॥

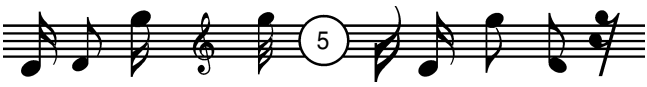

प्रातः सायं प्रार्थना

प्रातः काल करें प्रार्थना नित ।
प्रभुके पावन चरण स्मरण युत ।
सुमन से अर्चन वचन से कीर्तन ।
ध्यान योग से आत्म-समर्पण ॥
प्रातः काल करें प्रार्थना नित ।
प्रभु के पावन प्रेम प्रसादित ॥
तम से ज्योति, असत् से चलें सत् ।
मृत्यु के परे पाने को अमृत ॥

२

सायंकाले प्रबोधयेत् संवित् दीपं सुमंगलम् ।
प्रार्थयेद् गुरुरूपकं अन्तस्तमो निवारकम् ।
संध्याकाले प्रबोधयेत् संवित् दीपं सुवर्चसम् ।
प्रार्थयेद् गुरुमीश्वरम् अध्यात्मदीप बोधकम् ॥

३

सायंकाल करें साधना नित
संविदात्मनिज-बोधप्रदीपित ॥
तन-मन को करें शुद्ध-समाहित
तीन लोक हित शान्ति प्रवाहित ॥

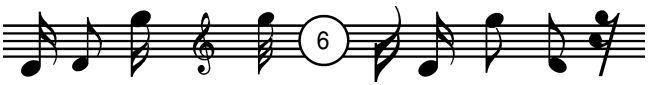

ओम् नमो नारायणाय गुरवे मंगलम्

ओम् मंगलं ओंकार मंगलम् ।
ओम् नमो नारायणाय गुरवे मंगलम् ॥१॥

नमो मंगलं नकार मंगलम् ।
नमज्जनोद्धार करण चरण मंगलम् ॥२॥

मोक्ष मंगलं मोकार मंगलम् ।
मोहनाशक प्रकाश मुने मंगलम् ॥३॥

नाम मंगलं नाकार मंगलम् ।
नाद बिंदु कलातीत नाथ मंगलम् ॥४॥

राम मंगलं राकार मंगलम् ।
राजराज पूज्य महाराज मंगलम् ॥५॥

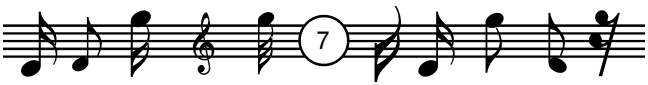

यशो मंगलं यकार मंगलम् ।
योगभूति विभूषित् यतीश मंगलम् ॥६॥

णाम् मंगलं णाकार मंगलम् ।
णाक्षरमातृका न्यस्ततनो मंगलम् ॥७॥

यज्ञ मंगलं यकार मंगलम् ।
यमनियमालय योगारूढ मंगलम् ॥८॥

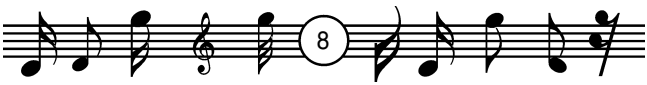

गुरुः शरणम्

गुरुः शरणं गुरुः शरणम् ।
सदा मम श्री गुरुः शरणम् ॥ध्रुवपद॥

न मे कर्म न मे शक्तिः
न मे बन्धः न मे मुक्तिः
गुरुः कर्ता गुरुर्दाता
सदा मम श्री गुरुः शरणम् ॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म
सदा मम श्री गुरुः शरणम् ॥२॥

गुरुः शास्त्रं गुरुः शास्ता
गुरुः शिष्यस्य तारकः
गुरुः संवित् स्वरूपात्मा
सदा मम श्री गुरुः शरणम् ॥३॥

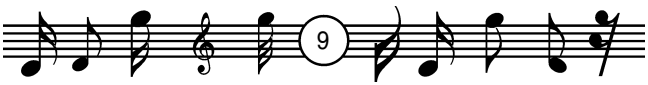

सच्चिदानन्दगुरु

सच्चिदानन्द गुरु सच्चिदानन्द ॥ ध्रुवपद ॥

हितोपदेश गुरु सच्चिदानन्द
हृदय निवास गुरु सच्चिदानन्द
संवित् प्रकाश गुरु सच्चिदानन्द ॥१॥

ज्ञानप्रदीप गुरु सच्चिदानन्द
मौन प्रलाप गुरु सच्चिदानन्द
संवित् स्वरूप गुरु सच्चिदानन्द ॥२॥

कैलासद्वार गुरु सच्चिदानन्द
करुणावतार गुरु सच्चिदानन्द
संवित् साकार गुरु सच्चिदानन्द ॥३॥

दीक्षा प्रदान गुरु सच्चिदानन्द
मोक्ष निधान गुरु सच्चिदानन्द
संवित् प्रज्ञान गुरु सच्चिदानन्द ॥४॥

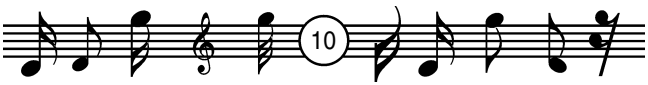

गुरुचरणमतिकरुणम्

गुरुचरण – मतिकरुण – मनवरतं वन्दे ।
भवतरण – विधिसरल – करण–रतं वन्दे ॥ध्रुवपद॥

मृदुहसित – मधुझरित – वदन धृत–शोभा ।
भ्रमतिमिर – हरमिहिर – गुरु मुख सुरेभा ॥१॥

त्रिविधमल – हरणजल – धर प्रबलधारा ।
निजचरण – श्रितसुजन – हित भरणभारा ॥२॥

धन युवति – विषयरति – गलितमति कान्तं ।
श्रुतिभणित – पदनिरत – हृदय भुवि भान्तं ॥३॥

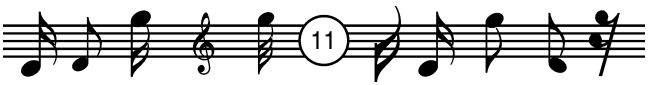

गुरुमहिमा

गुरु महिमा गुरु महिमा अपार महिमा गुरु महिमा
अगम्य गरिमा गुरु महिमा ॥ध्रुवपद॥

त्रिमूर्तिधारिणी गुरु महिमा
त्रितापहारिणी गुरु महिमा
शिष्योद्धारिणी गुरु महिमा
शिवैक्यकारिणी गुरु महिमा ॥१॥

अग्निपरीक्षा गुरु महिमा
आत्म सुरक्षा गुरु महिमा
कृपा कटाक्षा गुरु महिमा
शांभवी दीक्षा गुरु महिमा ॥२॥

रसमय विकसन गुरु महिमा
रहस्य प्रकटन गुरु महिमा
संशय निरसन गुरु महिमा
संविन्निमज्जन गुरु महिमा ॥३॥

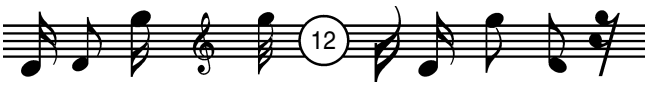

चरण युगल पर

चरण युगल पर शीष झुकाकर
हृदयकमल धर करुँ नमस्कार ॥ध्रुवपद॥

अनन्त संपद सुन मेरी प्रार्थना
अन्त समय तक करुँ गुरु अर्चना
मैं पशु तुम पति अन्तरयामि
भक्त वत्सल प्रभु जीवन स्वामी ॥१॥

अविचल निर्मल भक्ति हो मेरा धन
और क्या चाहूँ जब मिली तुम्हारी शरण ।
जनम जनम के करे दुरित दहन
सहज सुखास्पद श्रीगुरु दर्शन
संवित् प्रेमास्पद श्रीगुरु दर्शन ॥२॥

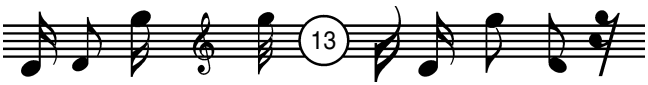

गुरुचरणन मन लागा

गुरु चरणन मन लागा लागा रे ॥ध्रुवपद॥

जनम जनम का सोया पड़ा मन
शबद सुनत अब जागा जागा रे ॥१॥

माता पिता धन कुटुम्ब का बन्धन
टूटा जो कच्चा धागा धागा रे ॥२॥

बहुत कृपा करि गुरु सर्वोपरि
मोह महाभ्रम भागा भागा रे ॥३॥

गुरु मारग नित चलत चलत चित
आनन्द निज उमडाया आया रे ॥४॥
(संवित् सुख पद पाया पाया रे)

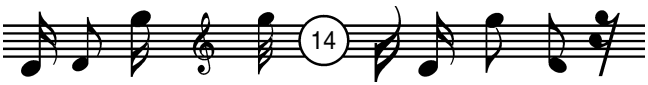

दिव्य सिद्ध नर तनुधारी

दिव्य सिद्ध नर तनुधारी
ब्रह्मनिष्ठ की बलिहारी
जय श्री गुरु की बलिहारी
(संवित् गुरु की बलिहारी) ॥ध्रुवपद॥

श्रद्धा समता शक्ति जगी
सत्यपथ की अब लगन लगी
यज्ञ बना सारा जीवन
(सत्र बना सारा जीवन)
जय जय जय हो श्रुतिचारी
मानव गुरु की बलिहारी
(संवित् गुरु की....) ॥१॥

विनय विरति विज्ञान मिला
भजन-प्रसादित-सुमन खिला

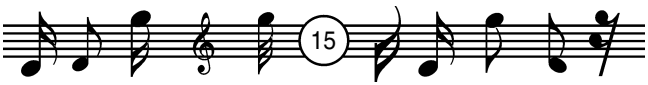

जग लगता अब नन्दन वन
(पग पग में अब नन्दनवन)
जय जय जय हो तमहारी
संसिद्ध गुरु की बलिहारी
(संवित् गुरु की....) ॥२॥

हुआ ग्रन्थि त्रय परिमोचन
रोम रोम में नव स्पन्दन
चित्त बना आनन्द गगन
(चित्त बना उन्मुक्त गगन)
जय जय जय हो सुखवारी
श्री शिव गुरु की बलिहारी
संवित् गुरु की बलिहारी ॥३॥

धुन : पूर्व ध्वनि - जय श्री गुरु की बलिहारी
उत्तर ध्वनि - संवित् गुरु की बलिहारी

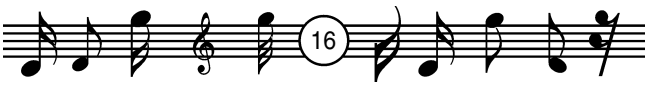

गुरु आये बादल बन

गुरु आये बादल बन सावन में ।
खुशियों की झड़ी लगी मन मन में ॥१॥

उमड़ाये दयामय सागर से
हरियाली छायी हिय मरुधर में ॥२॥

छबि पूनम की चान्दसी चमक रही
देख प्यासी चित्त चकोरी नाच रही ॥३॥

गुरु सूरज है संविद्–गगन माझे
म्हारी आंखों के तारा बन विराजे ॥४॥

गुरु संविद् बादल बन सावन में
बरसाये आनन्दजल आंगन में ॥५॥

धुन : पूर्व – संविद्गुरु आये
उत्तर – सुख बरसाये
(शिव दरसाये)

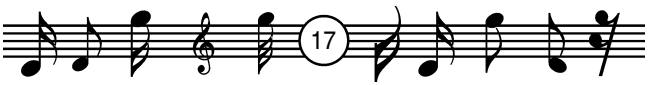

सकलसुकृत के स्त्रोत

सकलसुकृत के स्त्रोत
सकल सुखसागर स्नेह सुधाम
परमपुनीत परमप्रेमास्पद
गुरुचरणों को करूँ प्रणाम ॥१॥

गुरु ही ब्रह्मा गुरु ही विष्णु
गुरु ही देव महेश्वर है
शतशत नमन करूँ उस गुरु को
जो पर ब्रह्म परमेश्वर है ॥२॥

गुरु के वचन मंत्रसम जाने
गुरुमूरत का करे जो ध्यान
गुरु चरणों को ही जो ध्यावे
वही कहाये भक्त सुजान ॥३॥

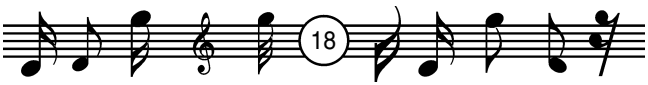

भवसागर अति दारुण दुःख कर
उसकी गति है अपरंपार
गुरु चरणों की सहज कृपा से
भवसागर हो जावे पार ॥४॥

निखिल विश्व में व्याप्त हो रहे
जड़ चेतन में एक समान
ईश्वर का जो पथ दरसाये
उस श्री गुरु को करूँ प्रणाम ॥५॥

दूर करे अज्ञान अन्धेरा
दिव्य दृष्टि का दे वरदान
रोम रोम को करे संविन्मय
उस श्री गुरु को करूँ प्रणाम ॥६॥

मेरे नाथ जगत के ईश्वर
सद्गुरु मेरे जगद्गुरु
जो बैठे हैं सब के भीतर
संवित् रूप से वही गुरु ॥७॥

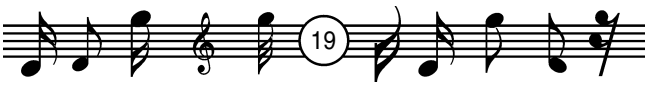

श्रीगुरुपरंपरा की जय हो

श्री गुरुपरंपरा की जय हो ॥ध्रुवपद॥

आदिशक्ति महादेव की जय हो
अनन्त श्री माधव की जय हो
अनादि श्रुतिपति ब्रह्मा की जय हो
जय हो जय हो गुरु की जय हो ॥१॥

योगी वसिष्ठ ऋषि की जय हो
शक्ति पराशर प्रभु की जय हो
वेदव्यास भगवान की जय हो
जय हो जय हो गुरु की जय हो ॥२॥

नित्यशुद्ध शुकदेव की जय हो
गौड़पाद गोविन्द की जय हो
भाष्यकार शंकर की जय हो
जय हो जय हो गुरु की जय हो ॥३॥

ब्रह्मविद्याचार्यों की जय हो
परम परात्पर गुरु की जय हो
निजसंविद् गुरु पद की जय हो
जय हो जय हो गुरु की जय हो ॥४॥

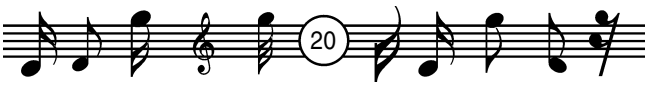

वेदव्यासं भजे

वेदव्यासं भजे देशिकाधीश्वरम्
पुण्यनामान-माम्नायकुल-वर्धनम्
सूत्रधारं महाकाव्यकारं भजे
कृष्ण द्वैपायनम् भजे बादरायणम् ॥१॥

कृष्ण योगेश्वरं भजे जगदीश्वरम्
देवकीनन्दनम् धृतगोवर्धनम्
उद्धवोद्धारकं पार्थ जयकारकम्
पूर्ण पुरुषोत्तमं भजे नारायणम् ॥२॥

भाष्यकारं भजे भाराधीश्वरम्
दक्षिणास्यं संन्यासीनां कुलवर्धनम्
धर्म संस्थापकं द्वैतभ्रमवारकम्
शंकरार्यं भजे संवित् परमायणम् ॥३॥

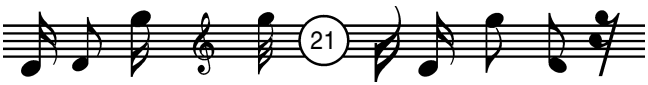

व्यासो विजयते

व्यासो विजयते
जयते जयते विजयते ॥ध्रुवपद॥

सत्यवती सुतः श्री शुक तातः
मानव सुरतरुः मुनिमण्डलगुरुः ॥१॥

ब्रह्म विनिश्चय सूत्रैः श्रुतिचय ।
भारं यत्कृतं दर्शन हारम् ॥२॥

येन प्रज्वालितो ज्ञान प्रदीपः ।
भारत शास्त्रे राष्ट्र गणाधिपः ॥३॥

सर्व पुराण कदम्ब निकुञ्जं
कीर्तय रे मन संवित् पुंजम् ॥४॥

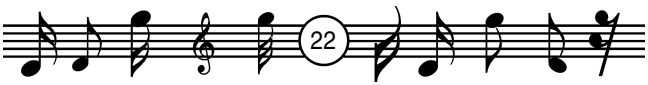

भज गुरु नाथम्

भज गुरुनाथम् ब्रह्मानन्दम्
संविद् रूपं आत्मारामम्
नित्यनिराकुल साक्षिस्वरूपं
नित्यात्मकनिज चित्सुखगात्रम् ॥१॥

चेतनरूपं सन्त सुसाध्यं
भ्रांतमनुज भव-दुःख-हारकम् ।
मायाविद्योपाधिविहीनम्
सत्यं शान्तं शुद्धस्वरूपम् ॥२॥

भेदातीतं बाधविवर्जितं
नादब्रह्म - निजबोध - स्वरूपम् ।
त्रिगुणातीतं त्रिमल विरहितं
त्रिजगद्व्यापकं - ज्ञान - प्रकाशम् ॥३॥

भक्तरक्षकं मोक्षदायकं
सूक्ष्म स्वरूप - सुखात्मक सूत्रम् ।
गुरु - श्री शंकर - विमल - पद युगं
भक्तजनहृदय - तिमिर - पतंगम् ॥४॥

विश्व मूल से

विश्वमूल से स्पन्दित हो घन महामौन ने जन्म लिया था!
शंकर ने अवतार लिया था ॥ध्रुव॥

तीर्थों को करके संस्कारित
मठ मन्दिर करके संस्थापित
जन जीवन उज्जीवित करने
यति कुल का उद्धार किया था
श्रुतिमत का उद्धार किया था ॥१॥

पीड़ित जन को गले लगाकर
हर दुखते मन को दुलराकर
चौक द्वार घर आँगन जा जा
अमित अनाविल प्यार दिया था
अद्वैत भक्ति चित्त दिया था ॥२॥

प्रस्थानत्रय भाष्य बनाकर
परिक्रमण त्रय भारत का कर
शुष्क शून्य शंकित मानव को
निः श्रेयस का मार्ग दिया था
संवित् पद का लक्ष्य दिया था ॥३॥

वन्देहं गुरु शंकर चरणम्

वन्देहं गुरु – शंकर – चरणम्
वेदान्त – नलिन – दिनकर – चरणम् ॥ध्रुवपद॥

भगवत्पाद – यतीश्वर – चरणम्
भाष्यकार – योगेश्वर – चरणम्
भक्तिरसामृत – वर्षक – चरणम्
भारतधर्म – प्रवर्तक – चरणम् ॥१॥

आर्याम्बार्ति – निवारक – चरणम्
आगम – निगमोद्धारक – चरणम्
परमहंसकुल – नायक – चरणम्
परसंविद्गतिदायक – चरणम् ॥२॥

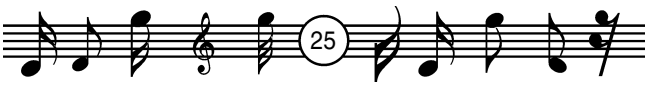

पार्थ सारथे भुवन गुरो

पार्थ सारथे भुवनगुरो जय
भगवद्गीते पावनि जय जय ॥ध्रुवपद॥

व्यासमुने गणनाथ गुरो जय
काव्यनिधे महाभारत जय जय ॥१॥

भाष्यकार श्रीशंकर गुरो जय
ब्रह्मविद्ये भवद्वेषिणि जय जय ॥२॥

स्वतंत्र भारत विश्व गुरो जय
भगवति संवित्त्रयी मयि जय जय ॥३॥

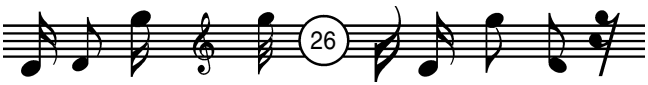

नारायण गुरु नारायण

नारायण नारायण नारायण गुरु नारायण ॥ध्रुवपद॥
नमोस्तु नारायण विश्वमूर्ते
नमोस्तु पद्मोद्भव वेदमूर्ते ।
नमोस्तु ब्रह्मिष्ठ वसिष्ठ योगिन्
नमोस्तु ते शक्ति विवर्धनाय ॥१॥

नमः पुराणज्ञ पराशराख्य
नमो नमः सत्यवतीसुजात ।
नमोस्तु ते व्यास विशुद्ध कीर्ते
नमोस्तु सर्वागम सूत्र कर्त्रे ॥२॥

गुरोर्गुरुः शंकर पूजितांघ्रिः
परायणस्तवं खलु भारतानाम्
वेदान्तनिष्ठां सुदृढीकरोतु
त्वत्पादपद्मं प्रणतोस्मि नित्यम् ॥३॥

जोगी नगर आया

जोगी नगर आया श्री गुरुदेव घर पधारिया ह्मारा
जन्म-जन्म का पुण्य हमारा
जागा जगत उजियारा ॥ध्रुवपद॥

मस्तक पर जटा शंभु सरीखा
भाल में उज्ज्वल भस्मत्रि रेखा
गले में रुद्राक्षमाला
कंठ में रुद्राक्षमाला ॥१॥

चरण में पादुका कर छड़ी शोभा
कंधे से झूला मोतियन झोला
गरीबों को बांटने आया
भक्तों को बांटने आया ॥२॥

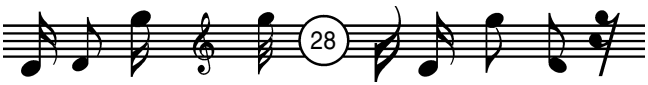

ज्ञान मुद्रा कर कमल विराजे
काषायाम्बर कटितट साजे
करुणा रस बरसाता
वचनामृत बरसाता ॥३॥

भक्त काम कल्पद्रुम-रूपा
परमहंस यति मण्डल भूपा
जीवन मुक्ति दिलाता (प्रदाता)
भवभय मुक्ति दिलाता ॥४॥

संवित् कीर्तन प्रवचन करता
शशि मुख देख उमड़े जन दरिया
हर हर महादेव पुकारा
जय जय गुरुदेव पुकारा ॥५॥

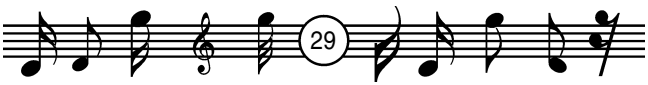

आया सद्‌गुरु आया

आया सद्‌गुरु आया - भीतर
सोया अलख जगाया ॥ध्रुवपद॥
माया धुंध हटाया - संवित्
सूरज सत्य दिखाया ॥१॥

कायाकल्प किया नर-तन को
कंचन काशी बनाया ।
कृपाकरी तापहरी
गंगा-ज्ञान बहाया ॥२॥

अगर-मगर संहारक युक्ति -
विराग खड्‌ग दिलाया ।
शिवभक्ति दे कश्ती
भव के पार लगाया
(संविद् धाम लगाया) ॥३॥

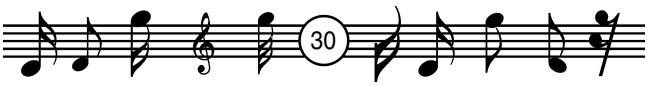

श्री संविद्गुरुराजराजपद

श्री संविद्गुरुराजराजपद
स्वयं समुज्ज्वल सदा विजयति ।
वेदशीर्षमणिपीठ विराजित
चरणन को अर्पित शत प्रणति ॥ध्रुवपद॥

पंचक्लेशरहितों से रमता
षड्विकार के परे निखरता ।
सप्तज्ञान सोपान विचरता
अष्ट सिद्धि तृणसमान करता ॥१॥

जाग्रतादि लोकत्रय भासक
साक्षी चैतन्य रूप दिखाता ।
पंचकोश पिंजर में निजानन्द
युक्ति कुंजि से खोल दिलाता ॥२॥

ब्रह्मविमर्शक गुरु आत्मेश्वर
विश्वरूपधर संविन् मूरत की
सोमसूर्यनक्षत्र दीप से
आरति करती निरन्तर धरती ॥३॥

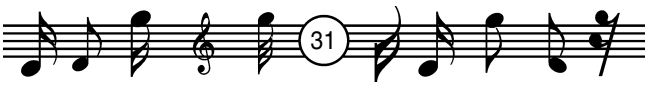

जयतु जयतु यति पूजित चरणं

जयतु जयतु यति पूजित चरणं
श्रुति चूड़ाम्बुज राजित चरणम् ॥ध्रु॥

भवमज्जन जन तारक चरणं
भावित भक्त विपत्ति निवारक चरणम् ।
आसुरदल बलमर्दन चरणं
दिव्य वृत्ति बलवर्धन चरणम् ॥१॥

संवित् साधक सुलभ्य चरणं
संवित्वेदी शिखामय चरणम् ।
संन्यासीकुलदीपक चरणं
संविन्मुक्ति प्रदायक चरणम् ॥२॥

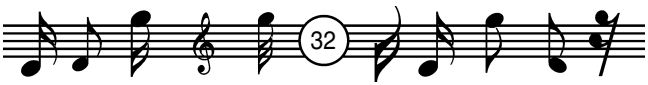

शिव कीर्तन

पाहि शिव पाहि शिव

पाहि शिव पाहि शिव पाहि शिव पाहि
पशुपति पशुपति पशुपति पाहि ॥ध्रुवपद॥

परम-कृपाकर पाहि शिव पाहि
प्रणत-शुभंकर पाहि शिव पाहि ॥१॥

ओंकारान्तर पाहि शिव पाहि
उमामहेश्वर पाहि शिव पाहि ॥२॥

त्रिपुरासुरहर पाहि शिव पाहि
पार्वती-मनोहर पाहि शिव पाहि ॥३॥

सोमकलाधर पाहि शिव पाहि
संवित् प्रभाकर पाहि शिव पाहि ॥४॥

धुन : पूर्व ध्वनि - पाहि शिव पाहि
उत्तर ध्वनि - पशुपति पाहि

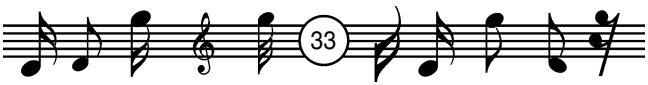

दिनकर हिमकर

दिनकर हिमकर पावक नयन
चन्द्रकला धर मन्मथ दहन
जटा जूट जय पार्वतीरमण
गंगाधर जगदम्बा रमण ॥१॥

त्रिभुवनपालन त्रिभुवननाशन
त्रिभुवनजन परमानन्दकरण
त्रिभुवनलीला नाटककरण ॥२॥

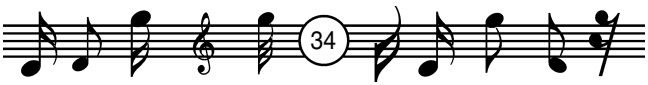

साम्ब सदाशिव

साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव
साम्ब सदाशिव जयशंकर हर ॥ध्रुवपद ॥

भयहर शंकर दु:खहर शंकर
कामदहन कर जय शंकर हर ॥१॥

जलधर शंकर मृगधर शंकर
जटावलयधर जय शंकर हर ॥२॥

यतिपति शंकर पशुपति शंकर
कनक सभापति जय शंकर हर ॥३॥

नटवर शंकर पुरहर शंकर
नागचर्मधर जय शंकर हर ॥४॥

शशिधर शंकर विषधर शंकर
शैलसुतावर जय शंकर हर ॥५॥

दिगम्बर शंकर चिदम्बर शंकर
संवित् प्रभाकर जय शंकर हर ॥६॥

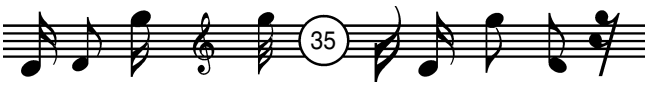

महादेव महादेव

महादेव महादेव महादेव शंकर
महादेव महादेव महादेव शंकर ॥ ध्रुवपद॥

परमपुरुष शंकर पार्वतीश शंकर
प्रणत – पाश – कृत – विनाश महादेव शंकर ॥१॥

विषम नयन शंकर उमारमण शंकर
विश्वभरण कालहरण महादेव शंकर ॥२॥

प्रणव घोष शंकर स्वप्रकाश शंकर
चिदाकाश नटनवेश महादेव शंकर ॥३॥

मत्समीप शंकर संविद् रूप शंकर
मुक्त – ताप – पापलेप महादेव शंकर ॥४॥

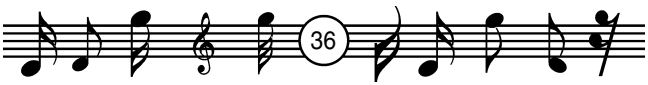

महादेव शरणं शरणं महादेव

महादेव शरणं शरणं महादेव ॥ध्रुवपद॥
शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ॥ ॥१॥

शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ॐ
हर हर हर हर हराय नमः ॐ
भव भव भव भव भवाय नमः ॐ
मृड मृड मृड मृड मृडाय नमः ॐ ॥२॥

संवित् पराशक्तिः शक्तिः ॐ शरणम्
शक्तिः ॐ शरणम् ॐ शक्तिः शरणम्
ॐ शक्तिः शरणम् गुरु शक्तिः शरणम्
गुरु शक्तिः शरणम् शिवशक्तिः शरणम् ॥३॥

धुन : पूर्वध्वनि - गुरु शक्तिः शरणम् ।
उत्तरध्वनि - शिव शक्तिः शरणम् ॥

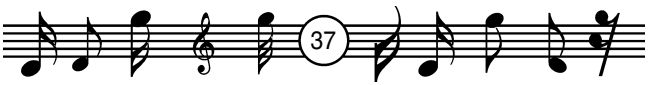

जय मृत्युञ्जय हर

जय जय जय जय मृत्युञ्जय हर
हर हर हर हर गौरीशंकर ॥ध्रुवपद॥

गंगा तरंगित - तुंगजटाधर
तुंगजटाधर पिंग जटाधर
गगनकलेवर गजचर्माम्बर ॥ ॥१॥

विशाल - त्रिशूल - कपालकरधर
कपालकरधर कपालमृगधर
कराल गरलालंकृत - कंधर ॥२॥

त्रयक्ष - सुरक्षित - भुवन महेश्वर
भुवन - महेश्वर भुवन मनोहर
शिव सर्वेश्वर - संवित् परावर ॥३॥

धुन : पूर्व ध्वनि - मृत्युञ्जय हर
उत्तर ध्वनि - गौरिशंकर

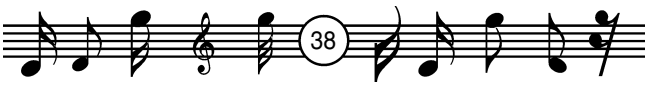

अचलेश्वर शिव

अचलेश्वर शिव अचलेश्वर शिव
अचलेश्वर शिव अचल शिव ।
आत्मेश्वर शिव आत्मेश्वर शिव
आत्मेश्वर शिव आत्म शिव
आत्म शिव, परमात्म शिव ॥ध्रुवपद ॥

अरुणाधर शिव अरुणाधर शिव
अरुणाधर शिव अरुण शिव
अम्बावर शिव अम्बावर शिव ।
अम्बावर शिव अम्ब शिव
अम्ब शिव जगदम्ब शिव ॥१॥

विश्वंभर शिव विश्वंभर शिव
विश्वंभर शिव विश्व शिव
व्योमाम्बर शिव व्योमाम्बर शिव ।
व्योमाम्बर शिव व्योम शिव ।
व्योम शिव चिद्व्योम शिव ॥२॥

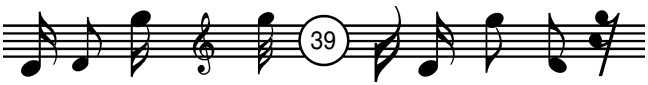

परमेश्वर शिव परमेश्वर शिव
परमेश्वर शिव परम शिव
प्रणवान्तर शिव प्रणवान्तर शिव
प्रणवान्तर शिव प्रणव शिव ।
प्रणव शिव ब्रह्मप्रणव शिव ॥३॥

सोमांचित शिव सोमांचित शिव
सोमांचित शिव सोम शिव
कामान्तक शिव कामान्तक शिव
कामान्तक शिव काम शिव ।
काम शिव निष्काम शिव ॥४॥

करुणालय शिव करुणालय शिव
करुणालय शिव करुण शिव
संविन्मय शिव संविन्मय शिव ।
संविन्मय शिव संवित् शिव ।
संवित् शिव परसंवित् शिव ॥५॥

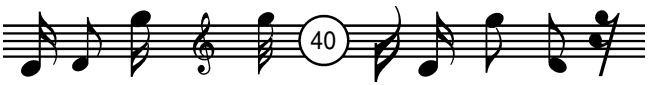

भज ध्यानैकनिरत

भज ध्यानैकनिरत – सदाशिवम् ॥ध्रुवपद॥

दक्षिणामूर्ति रूपं महादेवम्
वटमूलैकनिलय – सुवैभवम् ॥१॥

ज्ञानमुद्राक्षमाला – विद्या धरम्
धृत – पीयूष – कलशं शंकरम् ॥२॥

प्रणवाकार – प्राकार मन्दिरम् ।
मौन – व्याख्या – मुदित मुख सुन्दरम् ॥३॥

सनकादि – प्रवर – मुनिवीक्षितम् ।
संविज्ज्ञान – प्रदान – व्रत – दीक्षितम् ॥४॥

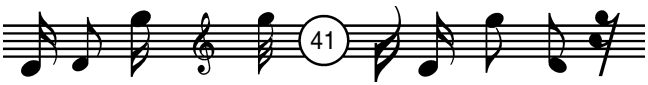

मिहिरज मरणद

मिहिरज मरणद शिव चरणं
मामक मनसि विभव चरणं ॥ध्रुवपद॥

अर्बुतशैल शिखा भरणं
आनन्दकानन भुवि चरणं ॥१॥

प्रलय नटन विरचित चरणं
प्रपन्न साधक जन शरणं ॥२॥

वटतरुमूल निकट रमणं
संवित्प्रसाद प्रकट चरणं ॥३॥

शिव चरणं शंकर चरणम्
हर चरणं भव भय हरणम् ॥४॥

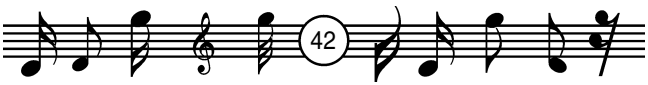

हे पञ्चवदन हिमगिरि

हे पञ्चवदन हिमगिरि – सदन
प्रपंच – शमन पार्वतिरमण ॥ध्रुवपद॥

हे भूताधिप हे भवभावन
भव्यगुणालय भस्मविभूषण
भुवनैक गुरो भालविलोचन
भवानीप्रियकर ताण्डव नर्तन ॥१॥

हे मृत्युंजय हे वृषवाहन
पाप विनाशन नाथ त्रिनयन
सोम पुरान्तक नागाभरण
संवित् प्रकाशक साधक शरण ॥२॥

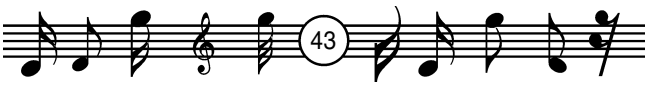

जगतः पितरौ वन्दे

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥ध्रुवपद॥

वागर्थाविव संपृक्तौ विज्ञानानन्द विग्रहौ
विश्व विभूतिस्थौ वन्दे, पार्वती परमेश्वरौ ॥१॥

भालनेत्रौ भसितांगौ, भक्त त्राण प्रतिबद्धौ
भवानी शंकरौ वन्दे, पार्वती परमेश्वरौ ॥२॥

नाट्य लास्य प्रवर्तकौ, निगमान्त संचारिणौ
नित्योत्सवालयौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥३॥

ह्रींकारारण्य कुञ्जरौ, हृत्पद्मस्थौ हंसवरौ ।
ओंकार रूपिणौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥४॥

मुक्ति प्रवाल संनिभौ, प्रेमस्यूतौ सुमंगलौ ।
परस्पराश्लिष्टौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥५॥

सद्योमुक्ति फलप्रदौ, संसारातपवारकौ ।
संविद्द्रुमौ शिवौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥६॥

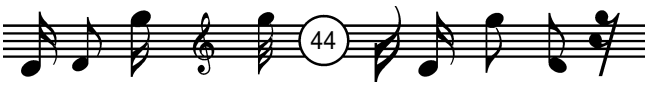

शिव के समान

शिव के समान दाता नहीं है
दाता नहीं कोई त्राता नहीं है
उमा के समान माता नहीं है
माता नहीं कोई नाता नहीं है ॥१॥

प्रभुजन से कोई धन यश पाता
स्वर्ग भोग कोई देव भी देता
पर महादेव के सिवा न कोई
जनम मरण-बन्धन से छुड़ाता
नित्य निरन्तर मुक्ति दिलाता ॥२॥

मलमय काया को जनमाती
जननी शिशु को दूध पिलाती
पर भगवति के सिवा न कोई
निर्मल ज्ञानस्वरूप दिखाता
संवित् सुधा रस पान कराता ॥३॥

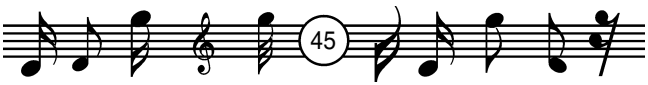

हिमगिरि के इक तुंग

हिमगिरि के इक तुंग शिखर पर
ध्यान मगन थे उमामहेश्वर ॥
आये प्रभु के दर्शन को सुर,
अस्त हुये अंजलि दे दिनकर ॥
हर्षित हो गाये सुर हर हर,
हर हर शंकर, जय शिव शंकर ॥
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
ध्यान मगन थे गगन कलेवर ।
गगन कलेवर गौरी शंकर ॥१॥

करुणामय के नयन खुल गये
कंपित शीर्ष जटान् खुल गये ॥
तनिक डमरु को ध्वनित किये शिव
ताण्डव भाव में द्रवित हुए भव
हिमगिरि के सित तुंग शिखर पर
भाव भरित थे भवानि शंकर ॥२॥

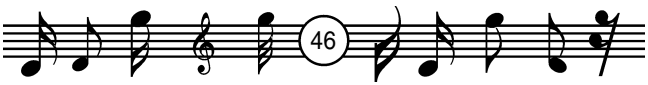

मृदंग वादक हुये जनार्दन
मधुर सामगायक चतुरानन
संवित् भगवति प्रेरित करती
स्पन्दित शिव थे नन्दित धरती
हिमगिरि के श्री तुंग शिखर पर
नृत्य निरत थे महानरेश्वर
महानटेश्वर गौरी शंकर
गौरी शंकर संवित् गुरुवर ॥३॥

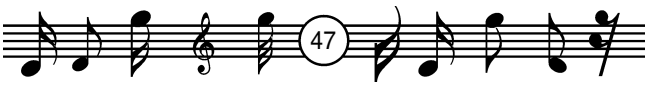

सोमनाथं भज

सोमनाथं भज सोमनाथं भज
सोमनाथं सततं भज साधो ॥ध्रुवपद॥

वामार्धांचित – गिरजाकान्तं
विश्वनाथमानन्दवनान्तं

कामविघातं गणपति तातं (कुमार तातं)
मोहमृगान्तकमादिकिरातम् ॥सोम॥

सोमनाथं सततं भज साधो
क्षेमधामं शरणं व्रज, साधो ॥ध्रुवपद॥

श्मशानरमणं शमदमभरणं
सृष्टिस्थितिलय – सन्तति करणं

श्रीगुरुवपुषं विगलित कलुषं (मौनोपदेशं)
समरसनिजसुख – सुधाभिवर्षम् ॥सोम॥

सोमनाथं सततं भज साधो ।
व्योमकेशं शरणं कुरु साधो ॥ध्रुवपद॥

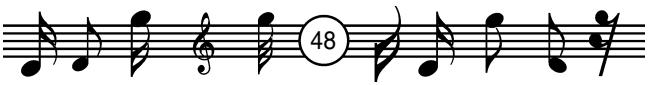

प्रमाद कदनं दशार्धवदनं
प्रथितार्बुदगिरि – कृतात्मसदनं
सन्तसरोवर – समुदितलिंगं (शोभितलिङ्गः)
स्फुरितायुत – परसंवित् स्फुलिंगम् ॥सोम॥

सोमनाथं सततं भज साधो ।
कामपूरं निलयं कुरु साधो ॥ध्रुवपद॥

भवानिशंकर नमामि नियतं
भज शिव शिवेति भव हर मृडेति
भावय शिवचरणं हृदि लसितं (श्रुति गलितं)
विविधं विहितं सुखदं सुहितम् ॥सोम॥

सोमनाथं सततं भज साधो ।
राम पूज्यं रमणं भज साधो ॥ध्रुवपद॥

शिव शिव शिवेति जप मन सततं
हर हर हरेति वा वद सततं
भव भव भवेति भज मन सततं
मृड मृड मृडेति वा रट सततम् ॥ध्रुवपद॥

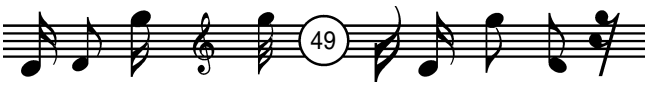

भज सोमनाथं भज सोमनाथं

भज सोमनाथं भज सोमनाथं
भुवनैकनाथं भज सोमनाथम् ॥ध्रुवपद॥

मन्दाकिनी - चुम्बित - सुन्दरांगं
गांगेयतातं भज सोमनाथम् ॥१॥

देवाधिदेवार्चित - पादपद्मं
देव्यार्धदेहं भज सोमनाथम् ॥२॥

सौराष्ट्र-देशे द्युतिर्लिंगरूपं
चन्द्रार्धचूडं भज सोमनाथम् ॥३॥

शैलार्बुदे सन्तसरोवरोत्थं
संवित् सरोजं भज सोमनाथम् ॥४॥

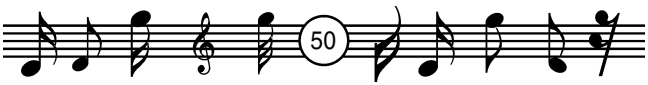

ज्योतिर्मयं लिंगं

ज्योतिर्मयं लिंगमानन्दकन्दम्
चन्द्रादिवन्द्यं हतपाप वृन्दम् ।
मुक्ति प्रदानाय कृतावतारं
तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

तुंगार्बुदारण्य पुण्याद्रिश्रृंगे
कुमारिकाधिष्ठिते क्षेत्रमूले ।
यतीन्द्र संसेव्य सरोवरस्थं
तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

श्री दक्षिणामूर्ति रूपेण भातं
त्रिपुरेश्वरी संविदम्बा समेतम् ।
संवित् सभानाथमनाथनाथं
तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥३॥

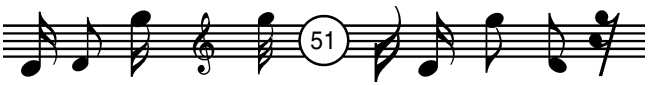

रामेश्वर जय

रामेश्वर जय रामेश्वर जय
रामाराधित रामेश्वर जय ॥ध्रुवपद॥

सीतापति प्रिय रामेश्वर जय
सिकतात्मलिंग रामेश्वर जय ॥१॥

वानर पूजित रामेश्वर जय
विज्ञान लिंग रामेश्वर जय ॥२॥

आंजनेयप्रिय रामेश्वर जय
आनन्द लिंग रामेश्वर जय ॥३॥

संविन्मय श्री रामेश्वर जय
ज्योतिर्लिंग श्री रामेश्वर जय ॥४॥

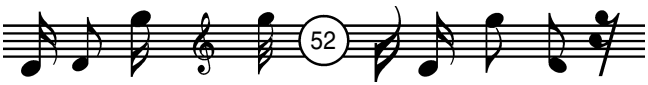

नगराजकिशोरी रमण

नगराजकिशोरी रमण नन्दीश्वर-वाहन
नतपाशविमोचन ज्योतित्रय-लोचन ॥ध्रुवपद॥

चन्द्रचूड गंगाभरण काल-काम-दर्पदमन
चितिभस्म-विभूषण यतिजनमनमोहन ॥१॥

नीलमेघकन्धर नागवलयसुन्दर ।
नृत्यारत-चिदम्बर विश्वंभर दिगंबर ॥२॥

श्रीसंवित्धामविहार संसेवित-साधकनिकर ।
संवित्सागरगंभीर हर हर श्रीगिरीश्वर ॥३॥

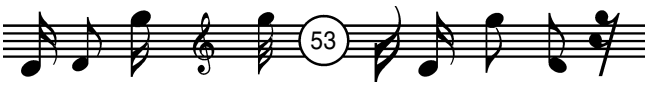

अरुणाचल शिव

अरुणाचल शिव अरुणाचल शिव
अरुणाचल शिव अरुण शिव ॥ध्रुवपद॥

परमानन्दमय पार्वति प्रणय –
सुखरसलालस तरुण शिव ॥१॥

विरूपाक्ष – प्रमुख – प्रखर – मुनीक्षित –
साक्षादपरोक्ष – चरण शिव ॥२॥

यतीश्वरानन्द – मानसकंदर
मौनाराधन वरण शिव ॥३॥

ब्रह्म संवित् परापीत कुचाम्बिका ।
गीतहंस ध्वनि रमण शिव ॥४॥

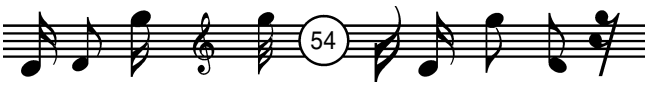

श्री सोमेश्वर प्रभास संभव

श्री सोमेश्वर प्रभास संभव
संवित् ज्योतिर्लिंग शिव ॥ध्रुवपद॥

श्री शैलेश्वर भ्रमराम्बावर
मल्लिकार्जुन महेश्वर ॥१॥

क्षिप्रातीर विराजित मन्दिर
महाकाल भय नाशकर ॥२॥

रेवासलिलाप्लुत त्रिपुरारे
ओंकारेश्वर कामारे ॥३॥

संसारामय वारक तारक
वैद्यनाथ नतसहायक ॥४॥

वामार्धाम्बासमेत प्रियदव
भीमाशंकर उमाधव ॥५॥

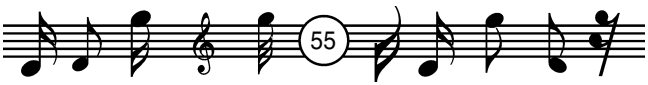

सीतापति संकट हर शंभव
सेतुबन्ध रामेश शिव ॥६॥

दारुकवन चर दिव्य दिगम्बर
नागेश्वर मुनिमोहहर ॥७॥

वाराणसी पुरीश्वर शंकर
विश्वेश्वर जन मुक्तिकर ॥८॥

गोदावरी जटाधर सुन्दर
त्रयम्बक मृत्युञ्जयेश्वर ॥९॥

तुंग हिमालय केदारेश्वर
मंदाकिनी जलार्द्र हर ॥१०॥

श्री राजेश्वर शिवालयाश्रित
धुश्मेश्वर वान्छितप्रद ॥११॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्वरूपम्
स्मररे साधक नाशय पापम् ॥१२॥

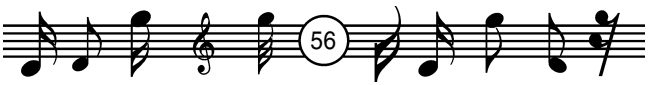

सोमनाथो मल्लिनाथः

सोमनाथो मल्लिनाथः
कालनाथोंकारनाथः
वैद्यनाथो भीमनाथः
रामनाथो नागनाथः ॥१॥

विश्वनाथः त्र्यम्बकस्य नाथः
केदारस्य नाथः
घुश्मनाथ इति प्रोक्तो
ज्योतिर्लिङ्गात्मकः शिवः ॥२॥

द्वादशैतानि नामानि
संविन्नास्थस्य नित्यशः
पठेत् भक्त्या श्रृणुयाद्वा
सद्योमुक्तिमवाप्नुयात् ॥३॥

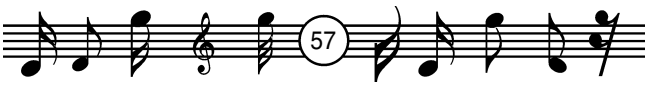

जय सोमनाथ प्रिय स्वप्रकाश

जय सोमनाथ प्रिय स्वप्रकाश
जय भारतप्राण वसुधावकाश ॥ध्रुव॥

श्रीकृष्णलीला विलयालयाय
सरितासागरसंगमाय प्रणामः ॥१॥

शशिशापमोक्षाय धृतदीक्षागुरवे
शिवभक्तिफलसिध्द्यै नमः कल्पतरवे ॥२॥

श्रीशंकराचार्य नुतपुण्यकीर्ते
शतदैत्य घाताविघटितात्मभूते ॥३॥

कैलाससमदेवगृह शोभिताय
श्रीराष्ट्र-धाम्ने शतशः प्रणामः ॥
श्रीसंविद्धाम्ने शतशः प्रणामः ॥४॥

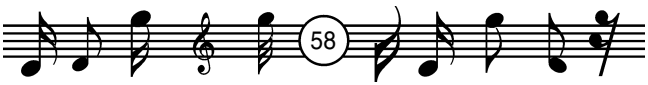

त्र्यम्बकेश्वर हे त्रिपुरारि

त्र्यम्बकेश्वर हे त्रिपुरारि
त्रिलोकपालक त्रितापहारि ॥ध्रुव॥

तुंगब्रह्मगिरि विहारि
गौतमऋषि को उबारि ॥१॥

गंगा-प्रकटि जटाशंकरि
गोदावरी पुण्य नाम धारि ॥२॥

अमृतकुंभ की रक्षाकरि
आत्मसंवित् सुधारसझरि ॥३॥

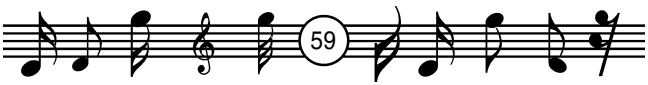

त्र्यम्बकेश ज्योतिर्लिंग ।

त्र्यम्बकेश ज्योतिर्लिंग
त्राहि मां दयापांग ॥ध्रुव॥

पार्वत्या कृतालिंग
भस्मीकृतमत्तानंग
पाहि पाहि भसितांग ॥१॥

कालकूट मणिकण्ठ
किरीटरूप शशिखण्ड
कनकाचल करकोदण्ड ॥२॥

जटाटवी लतागंग
गोदावरीतटासंग
संवित्साधक भयभंग ॥३॥

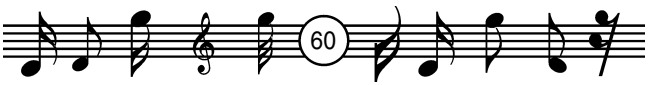

मेधादक्षिणामूर्ति जय स्तोत्रम्

जय जय जय दक्षिणामूर्ते
मेधां प्रज्ञां मह्यं प्रयच्छ ॥ध्रुवपद॥

जय विज्ञान मुद्राक्ष माला कुंभलसत् कर
जयेतर करन्यस्त पुस्तकास्त रजस्तम ॥१॥

जय न्यग्रोध मूलस्थ जय कारुण्यविग्रह ।
जयापस्मार निक्षिप्त दक्षपाद सरोरुह ॥२॥

जय भर्ग भवस्थाणो जय भस्मावगुण्ठन ।
जयासंग हिमोत्तुंग कैलासाद्रि निकेतन ॥३॥

जय निर्द्वंद्व निर्दोष जय संवित् सुखाम्बुधे ।
जय निस्सीम भूमात्मन् जय निस्पन्दनीरधे ॥४॥

जयाणिमादि भूतीनां वैभवादिव्यपाश्रय ।
जयस्वभाव भासैव विभासित जगत्त्रय ॥५॥

जयमार्ताण्ड सोमाग्नि लोचनत्रय मण्डित ।
जय संवित् सभा मध्ये मौनव्याख्यान पण्डित ॥६॥

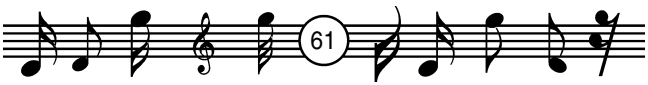

क्षमा करो शिव

क्षमाकरो शिव क्षमाकरो
कृतापराध को क्षमाकरो
ममापराध को क्षमाकरो ॥ध्रुवपद॥

गर्भवास बालकपन में
प्रौढ़ावस्था यौवन में
कृतापराध को क्षमाकरो ॥१॥

जाग्रत स्वप्न में निशिदिन में
कर्म वचन और चिन्तन में
कृतापराध को क्षमाकरो ॥२॥

यज्ञ दान तप साधन में
ईश्वर गुरु जन सेवन में
कृतापराध को क्षमाकरो ॥३॥

कुसंग कुकर्म कलुषित हूँ
फिर भी तुम्हारा ही सुत हूँ
(फिर भी संवित् प्रसूत हूँ)
कृपा निधे शिव क्षमाकरो
करुणासागर क्षमा करो ॥४॥

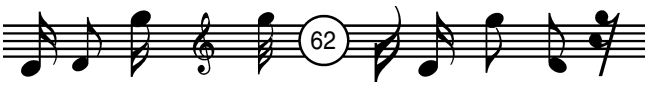

ॐ नमः शिवाय देशिकाय मंगलम्

ॐ मंगलं ओंकारमंगलम् ।
ॐ नमः शिवाय देशकाय मंगलम् ॥ध्रुव॥

नमो मंगलं नकारमंगलम्
नतजनार्ति-हरण-चरण नाथ मंगलम् ॥१॥

मनो मंगलं मकारमंगलम्
महादेव मृत्युंजय मुक्तमंगलम् ॥२॥

शिवो मंगलं शिकार मंगलम् ।
शिवार्धांग शितिकण्ठ शुभांग मंगलम् ॥३॥

वातु मंगलं वाकार मंगलम् ।
वामदेव वन्द्य वृषभवाह मंगलम् ॥४॥

यच्छ मंगलं यकार मंगलम् ।
यतीश्वराराध्य संवित्पाद मंगलम् ॥५॥

चलो मन मल्लिकार्जुन - शिव मन्दिर

चलो मन मल्लिकार्जुन - शिव मन्दिर
संवित् साधक जन के बन सहचर
संवित् देशिक जन के बन परिचर ॥ध्रुव॥

अष्ट द्वार अष्ट भैरव नवपुर
नवब्रह्मालय नवनन्दीश्वरष ॥१॥

नित्य पूजन करने आते सुर
श्रीगिरि निवास निरत मुनिनिकर ।
दर्शनमात्र से मुक्ति दे शंकर
ज्योतिर्लिंग बने भ्रमराम्बावर ॥२॥

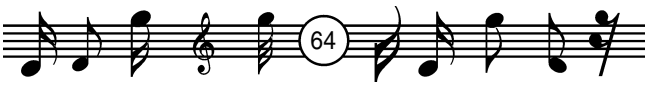

साम्बं भज हृदालम्बम्

साम्बं भज हृदालम्बम्, ज्योतिर्लिंगात्मक – बिम्बम् ॥

भ्रमराम्बा भुवनाम्बा मनोहरं मधुरं हरम् ॥१॥

मल्लिका – वल्लरी – चूडं शशिखण्डापीडम् ॥२॥

पातालजे गंगाजले अभिषिक्तं श्रीगिरिसक्तम् ॥३॥

वन्देहं पापापहं हृतसंवित्साधकमोहम् ॥४॥

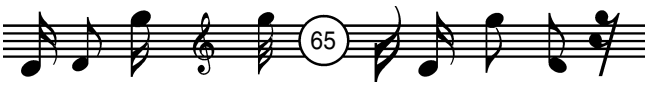

शक्ति कीर्तन

ॐ शक्ति ॐ

ॐ शक्ति ॐ शक्ति ॐ शक्ति ॐ
आदिशक्ति महाशक्ति पराशक्ति ॐ ॥ध्रुवपद॥

ब्रह्मशक्ति विष्णुशक्ति रुद्रशक्ति ॐ ॥१॥

ज्ञानशक्ति इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति ॐ ॥२॥

सूर्यशक्ति सोमशक्ति अग्निशक्ति ॐ ॥३॥

ईशशक्ति आत्मशक्ति गुरुशक्ति ॐ ॥४॥

तीन लोक तीन ज्योति तीन चेतन ॐ
तीन ताप शान्त करता शक्ति कीर्तन ॐ
संवित् कीर्तन ॐ ॥५॥

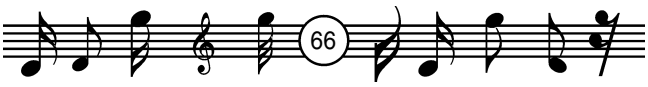

उदयाचल नभ

उदयाचल नभ कुंकुम जलभर
मंगल नीराजन विधितत्पर ।
तुहिनाचलकुल - तुंगपताके
त्रिलोचने शिवतरुणी जागो
त्रिलोकपालिनि तारिणी जागो ॥१॥

चिन्तामणिपुर मूलद्वार पर
अन्तःपुर-नूपुर सुन आतुर ।
पंक्तित्रय चिर खड़े योगेश्वर
मंत्रमातृका - मालिनी जागो
विनिद्रिता परवाणी जागो ॥२॥

ब्रह्मरन्ध्र शिव बैठ प्रतीक्षा
करते हैं तव संगतिकांक्षा ।
भुवनाधार - भुजङ्गिनि जागो ।
मूल प्रकृति महायोगिनि जागो ।
सुधामयि शिवकामिनि जागो ॥३॥

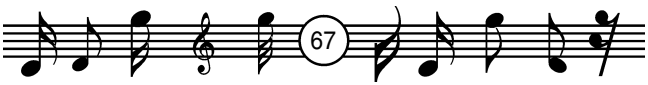

भारति भवानी भार्गवि जागो ।
भगवति स्वयं प्रभावति जागो ।
भैरवि शांभवि श्रीमयि जागो ।
ब्रह्ममहिषि महामाये जागो ।
संविन्मयि शिवजाये जागो ॥४॥

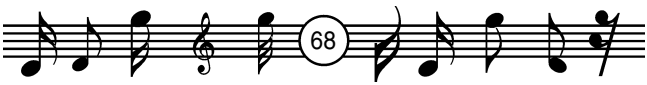

भासुरा श्री भवानी

भासुरा श्री भवानी भातु भातु भासुरा
मम हृदये भासुरा ॥ध्रुवपद॥

नगपति – कुलतिलकवती
नेति नेति श्रुतिनां गतिः
जगदुदय प्रलय–रता
जपा–कुसुम भासुरा ॥ ॥१॥

नतजन –समुद्धरण – तरी
नव नव रस – नटनकरी
दहन नयन तनुश्रिता
दहर – कुहर – भासुरा ॥२॥

शिवा उमा महेश्वरी
श्रीं – ह्रीं – बीजाक्षरी
त्रिपुर – मथन – पतिव्रता ।
तरुण – तपन – भासुरा ॥३॥

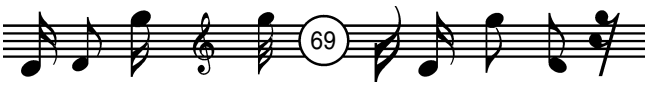

विश्वमयि शिवशक्तिमयि

विश्वमयि शिवशक्तिमयि
परमदयामयि प्रेममयि ॥ध्रुवपद॥

गीतमयि हे मौनमयि
गुरुमयि गूढविमर्शमयि
शिवताण्डवचित् – सभामयि ॥१॥

वेदमयि हे ब्रह्ममयि
सकलकलामयि लीलामयि
सदानन्दमयि संविन्मयि ॥३॥

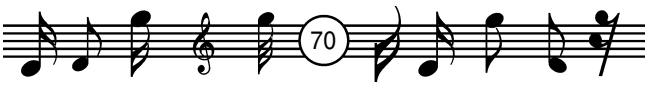

जयति संवित् स्वामिनी

जयति संवित् स्वामिनी हिमगिरीन्द्रनन्दिनी
जीवनमधु स्यन्दिनी ॥ध्रुवपद॥

अरुण किरण मालिनी अखिलभुवनपालिनी
अधरमधुरहासिनी ममहृदयनिवासिनी ॥१॥

त्रिनयननटनारता कुलकमलदलाश्रिता
प्रणव-रव विजृंभिता अमृतादि-संवृता ॥२॥

सुजन-भजन-रंजनी सकल-दुरित-भंजनी
दितिज-क्षति विधायिनी शरण-भरण-शालिनी ॥३॥

त्रिपुर सुन्दरी भैरवी श्रीभवानी शांभवी
हरिसहोदरी शंकरी भवतु मम शुभंकरी ॥४॥

नम इदं च मम शिवे अव भयंकरे भवे
रक्षणाय तत्क्षणम् कुरु कृपांगवीक्षणम् ॥५॥

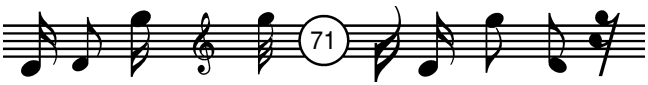

सन्ततमन्तर भज त्रिपुराम्बाम्

सन्ततमन्तर भज त्रिपुराम्बाम्
शशांककोटि-सदृश मुखबिम्बाम् ॥ध्रुवपद॥

सायं प्रातः स्मर शिवाजायाम्
श्री मातां ललितां श्रुतिगेयाम्
स्मारं स्मारं त्यज निजमायाम् ॥१॥

स्थापय - दृढ श्रद्धाबलिपीठम्
कृत्वा निशितं बुद्धि - विचारम्
छित्वा - संशयमर्पय - सारम् ॥२॥

पश्याहर्निश - महमिदमखिलम्
विगलितद्वैतं - विरजविपापम् ।
परसंवित् रसलहरीरूपम् ॥३॥

धुन : पूर्व ध्वनि - भज त्रिपुराम्बाम् ।
उत्तर ध्वनि - जय जगदम्बाम् ॥

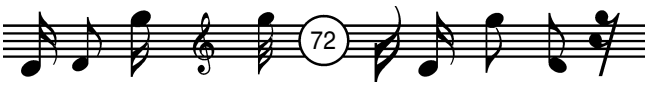

जननी शिवजाया

जननी शिवजाया कल्याणी ।
जन्म-जन्म दुःख सागर तरणी । ।ध्रुवपद॥

शिवमानस - समुल्लास कमलिनी ।
शरणागत जन - हृत्तम - दलिनी ॥१॥

कुल-पथ उज्जवल-करी कुंडलिनी ।
संवित् - सुधारस - साराप्लाविनी ॥ ॥२॥

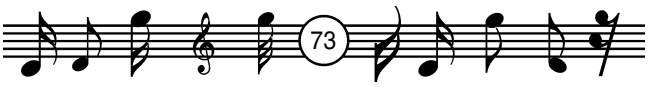

पूर्णकलामयि

पूर्णकलामयि संवित्स्वरूपिणी
समरसशालिनि बोधय मां
(बोधय मां प्रतिबोधय माम्
पालय मां परिपालय माम्) ॥ध्रुवपद॥

गुरुमूर्ते त्वां नमामि सततं
आत्मकाम संवर्धनि अम्ब ॥१॥

जगदोद्याने मृगसदृशं मां
साधनविमुखं मोचय जननि ।
प्रणवधनुषि संयोजय चित्तम्
परम लक्ष्य - तन्मयतां प्रापय ॥२॥

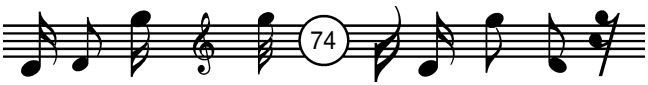

संविदेव हि देवता मम

संविदेव हि देवता मम
देवता पर देवता मम ॥ध्रुवपद॥

ईश्वरार्धशरीरिणी अमलवांछापूरिणी ।
अन्धकारिकुटुम्बिनि भण्डदैत्यविडंबिनी ।
बिन्दुमण्डलवासिनी चित् प्रसारोल्लासिनी ॥१॥

निर्मलात्रिमलावृता निष्कला सकलामृता ।
निष्प्रपंचप्रपंचना निर्गुणाकरुणाञ्जना
निस्तरंगसुखार्णवा नित्यस्पन्दमहोत्सवा ॥२॥

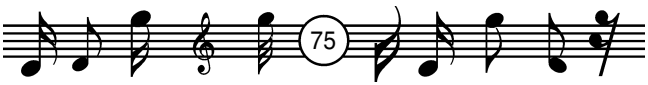

जय जय देवि दया लहरी

जय जय देवि दया लहरी ।
जननि महेश्वरी पालय माम् ॥ध्रुवपद॥

अमले कमले अद्‌भुत चरिते ।
आनन्द निलये पालय माम् ॥१॥

श्यामा वामा शुभ गुण धामा ।
शिवाभिरामा पालय माम् ॥२॥

चिन्मयि मृण्मयि चिरचंचलमयि ।
सर्वकलामयि पालय माम् ॥३॥

संसृति - लोचनि द्वैत - विमोचनी ।
संवित् स्वरूपिणि पालय माम् ॥४॥

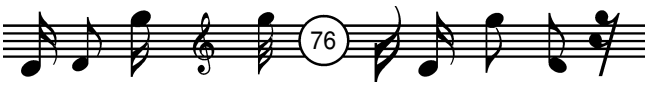

पाहि माम् पाहि माम् परा संवित्

पाहि माम् पाहि माम् परा संवित् पाहि माम्
रक्ष मां रक्ष मां राजेश्वरि रक्ष माम् ॥ध्रुवपद॥

परमदयाकरि जनपावनकरि ।
प्रणत-शुभंकरि शंकरि पाहि माम् ॥१॥

अशरण-शरणा हरि नुत-चरणा ।
अवगुण-निलयं कृपया पाहि माम् ॥२॥

प्रेम-पयोधर-रस शतधारा ।
स्नेह-दृशा दीनशिशुं पाहि माम् ॥३॥

रवि शशि हुताश रंजित नयना ।
दिशि-दिशि भ्रमन्तमन्धं पाहि माम् ॥४॥

धुन : पूर्व ध्वनि - पाहि माम् पाहि माम् ।
उत्तर ध्वनि -परा संवित् पाहि माम् ॥

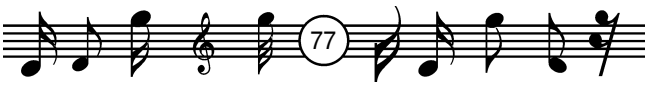

हिमाद्रि तनया

हिमाद्रि तनया दयार्द्र नयना ।
जननी जननी शिवशशि रजनी ॥ध्रुवपद॥

गुरुचरणाम्बुज धृत हृदयान्तर
मोहमहातम मिहिर सुवदनी
जननी जननी भवजल तरणी ॥१॥

अरुणा करुणा यतिजन शरणा ।
अनन्त ज्ञानानन्द वितरणा ।
जननी जननी संसृति मथनी ॥२॥

श्रुत्यन्तार्णव मन्थन सारा
सदाशिवादि सृजन विस्तारा ।
जननी जननी संवित् सुरमणी ॥३॥

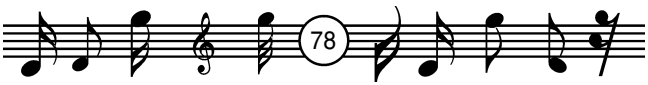

जयतु जयतु जगजननी

जयतु जयतु जगजननी चरणम्
श्रुति चूडाम्बुज राजित चरणम् । ॥ ध्रुवपद ॥

विधि-हरि-सुरादि वंदित चरणम्
नगेन्द्र-मानस नन्दित चरणम् ॥१॥

भवमज्जन-जन तारक चरणम्
भावित हृत्तम वारक चरणम् ॥२॥

आसुर-दल-बल मर्दन चरणम्
दिव्यवृत्ति-बल वर्द्धन चरणम् ॥३॥

संवित् साधन सुलभ्य चरणम्
संवित् वेदि शिखामय चरणम् ॥४॥

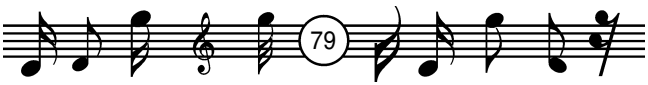

अम्बा भवानी अर्बुदा

अम्बा भवानी अर्बुदा जगदम्बा भवानी अर्बुदा
॥ध्रुवपद॥

अर्बुदा अर्बुदा आनन्द अर्बुदा ।
अर्बुदा अर्बुदा अखण्ड अर्बुदा ॥१॥

अखिलचराचर – व्यापिनी अर्बुदा ।
अविरल सृष्टि – विलासिनि अर्बुदा ।
अचिन्त्य महिमा – शालिनी अर्बुदा ।
अनन्यजन – परिपालिनी अर्बुदा ॥२॥

अर्बुदा अर्बुदा अमोघ अर्बुदा ।
अर्बुदा अर्बुदा अनादि अर्बुदा ॥३॥

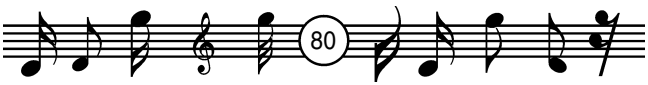

नीलकण्ठ-शिव रंजनी अर्बुदा ।
नभ-सन्निभा निरंजनी अर्बुदा ।
नलिन विशाल विलोचनी अर्बुदा ।
निजसंवित् सुविरोचनी अर्बुदा ॥४॥

अर्बुदा अर्बुदा अनन्त अर्बुदा ।
अर्बुदा अर्बुदा अनुपम अर्बुदा ॥५॥

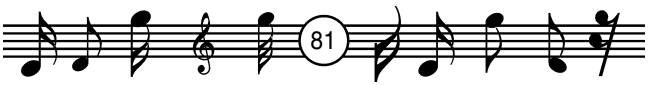

अर्बुदवासिनी अम्बा

अर्बुदवासिनी अम्बा जय जय ।
मन्द सुहासिनी माता जय जय ॥
अम्बा जय जय माता जय जय ।
अखिलाण्डेश्वर-जाया जय जय ॥

श्रीमाता जयार्बुदा ।
जयतु जयतु संविन्माता ॥१॥

अघ-संहारिणि अम्बा जय जय ।
मधुकरवेणी माता जय जय ।
अम्बा जय जय माता जय जय ।
आदिशक्ति महामाया जय जय । ॥२॥

असुर-निषूदनि अम्बा जय जय ।
मीन-विलोचनि माता जय जय ।
अम्बा जय जय माता जय जय ।
अजादि सुरगण-गेया जय जय । ॥३॥

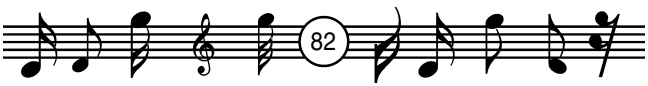

आत्मबोधिनी अम्बा जय जय ।
मन्त्रमालिनी माता जय जय ।
अम्बा जय जय माता जय जय ।
आगमनिगमामेया जय जय । ॥४॥

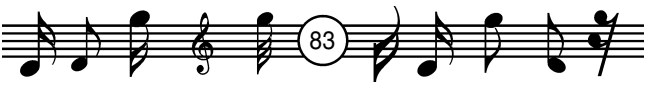

अम्बा तू अधर देवि

अम्बा तू अधर देवि अर्बुदा गुहा में ॥
अचलेश्वर कामिनी कृपा करो माँ ॥
कृपा करो माँ रक्षा करो माँ ॥ध्रुव॥

काश्मीर में क्षीर भवानी तू शारिका ॥
शिवाद्वैतदर्शिनी कृपा करो माँ ॥१॥

त्रिकूटा हिमालय में तू माता वैष्णवी
ज्वालानल मालिनी कृपा करो माँ ॥
कामरूप में कामा कालि घट्ट काली ॥
विंध्याचल वासिनी कृपा करो माँ ॥२॥

काशी अन्नपूर्णा तू मणिकर्णिका माता ॥
विश्वनाथ कुटुंबिनी कृपा करो माँ ॥
मधुरा में मीनाक्षी कांची कामाक्षी ॥
शंकरगुरु, स्वामिनी कृपा करो माँ ॥३॥

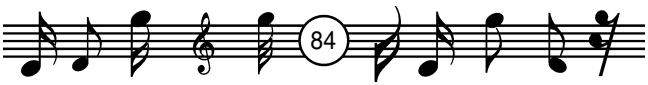

कावेरी तट में तू चामुंडा माता ।
महिषासुरमर्दिनी कृपा करो माँ ॥
कोडिचाद्री मूकांबा श्रृंगेरी शारदा ॥
श्रीविद्यारूपिणी कृपा करो माँ ॥४॥

सागर के संगम में कन्याकुमारी ॥
नित्य ब्रह्मचारिणी कृपा करो माँ ॥
सुषुम्ना के कमलों में कुलमाता कुंडलिनी ॥
सहस्रार गामिनी कृपाकरो माँ ॥
संवित् सुधा वर्षिणी कृपाकरो माँ ॥५॥

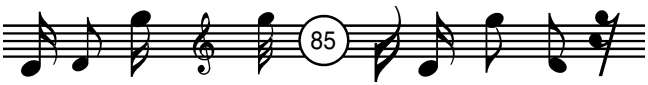

जय हो माँ तेरी

जय हो जय हो जय हो माँ तेरी जय जय हो
॥ध्रुवपद॥

गगन मंडल में धरणीधर में माता ।
कण-कण में सबके तेरी जय जय हो ॥१॥

जीवनदा बलदा मंगलदा माता ।
वरदा शुभदा माँ मोक्षप्रदा तुम हो ॥२॥

करुणाकर हो ज्ञानमयी माता ।
मम जीवनधन हो पथ-दर्शक तुम हो ॥३॥

पराशक्ति हो प्रेममयी माता ।
सदा दया-वत्सलता-पूरण तुम हो ॥४॥

हम साधक हैं तेरी शरण माता ।
कृपा करो हमको संविन्मय कर दो ॥५॥

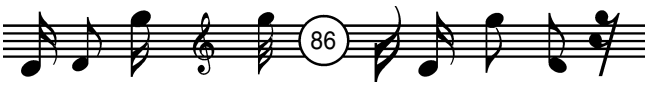

माँ तू प्रेम सुधा बरसादे

माँ तू प्रेम सुधा बरसादे
मन की कलियां आज खिलादे ॥ध्रुवपद॥

ओतप्रोत हो जीवनधारा
तेरे दिव्य मिलन के द्वारा
उर अन्तर की अमर ज्योति में
अपनी सुन्दर छवि दरसादे ॥१॥

दिव्य कर्म में दिव्य वचन में
दिव्य मेरे मन चिन्तन वन में
सौरभ बनकर प्रेममयी मां
सबको वासित कर मुसकादे ॥२॥

शत्रुमित्र कोई रहे न जग में
रागद्वेष मिट जाए मन में
सब में तू तेरे में सब कुछ
संविन्मय सम दृष्टि जगा दे ॥३॥

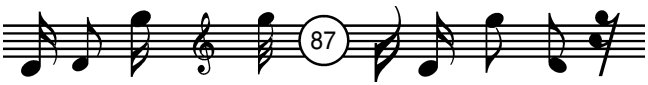

नवरात्री श्री जगदम्बा

नवरात्री श्री जगदम्बा
नव नव कर्त्री जगदम्बा
नवरात्री नव नव कर्त्री
नवनाथ-धारित्री जगदम्बा
नवरात्री नव नव कर्त्री
नवलोक-सावित्री जगदम्बा ॥१॥

विद्यावाणी जगदम्बा
वीणापाणी जगदम्बा
विद्यावाणी वीणापाणी
विश्वविनोदिनी जगदम्बा
विद्यावाणी वीणापाणी
विधिमनमोहिनी जगदम्बा ॥२॥

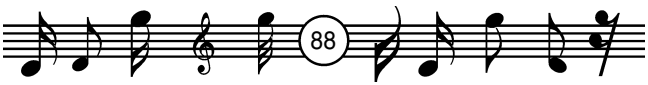

सुधासहोदरी जगदम्बा
सुखसंपत्करी जगदम्बा
सुधासहोदरी सुखसंपत्करी
श्रीमयी लक्ष्मी जगदम्बा
सुधासहोदरी सुखसंपत्करी
श्रीहरि पत्नी जगदम्बा ॥३॥

हिमगिरिनन्दिनी जगदम्बा
महिषविमर्दिनी जगदम्बा
हिमगिरिनन्दिनी महिष विमर्दिनी
सती भवानी जगदम्बा
हिमगिरिनन्दिनी महिष विमर्दिनी
रुद्रार्धांगिनि जगदम्बा ॥४॥

पर्वत पुत्री ब्रह्मचारिणी
शशिघंटा श्री जगदम्बा ।
कूष्माण्डा श्रीकुमार माता
श्री कात्यायनी जगदम्बा

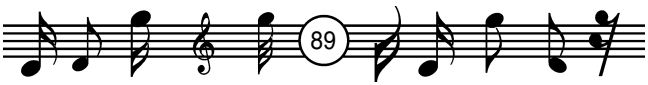

कालरात्री महती गौरी
सिद्धिदात्री जगदम्बा ॥५॥

इति नवदुर्गा जगदम्बा
दशमहाविद्या जगदम्बा
इति नवदुर्गा दशमहाविद्या
षोडशनित्या जगदम्बा
सप्त मातृका मंत्रमातृका
संविदम्बिका जगदम्बा ॥६॥

धुन : पूर्व ध्वनि – संविदम्बिका जगदम्बा
उत्तर ध्वनि – जय जय जय जय जगदम्बा

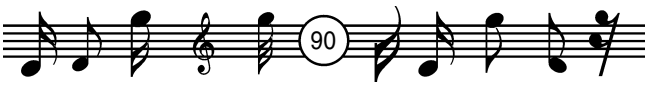

दुर्गे दुर्गतितारिणि जय जय

दुर्गे दुर्गतितारिणि जय जय
मातर्मंगलकारिणि जय जय ॥ध्रुव॥

माधवहृदय प्रबोधिनि जय जय
मधुकैटभ मतिमोहिनि जय जय ।
कमलोद्भव परिपालिनि जय जय
करुणाविग्रहधारिणि जय जय ॥१॥

सर्व देवभारूपिणि जय जय
सिंहासनसंस्थायिनि जय जय ।
महिषासुर संहारिणि जय जय
सुरनर मुनि वरदायिनि जय जय ॥२॥

अष्टशक्ति सहचारिणि जय जय
रक्तबीज वधकारिणि जय जय ।
शुंभनिशुंभ विनाशिनि जय जय
सुरथमनोरथ पूरिणि जय जय ॥३॥

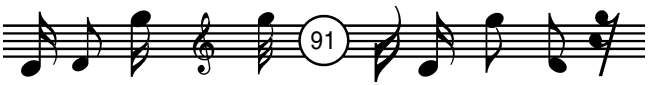

शरत् चंद्रिके

शरत् चंद्रिके संविदात्मिके ॥ध्रुवपद॥

हरसंयुते हिमशैल सुते
निजभक्तहिते निगमान्तर्गते ॥१॥

श्रुती-स्वर वर्ण मुर्च्छनालंकार
नादजनित राग रसभरित
संगीत रूपिणी सुधावर्षिणी
मातः सोमनाथ मनोहारिणी ॥२॥

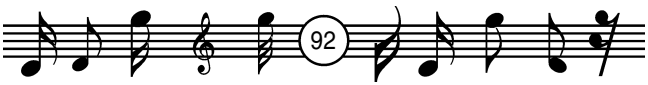

शांभवमूर्ति कामाक्षी

शांभवमूर्ति कामाक्षी
श्रीत्रिपुरेश्वरी कामाक्षी
ब्रह्ममयि श्री कामाक्षी ॥ध्रुवपद॥

श्रृंगारमूर्ति मीनाक्षी
श्री शिवशंकरी मीनाक्षी
स्नेहमयी श्री मीनाक्षी ॥१॥

तापसमूर्ति कन्याकुमारी
श्री विद्येश्वरी कन्याकुमारी
दयामयी श्रीकन्याकुमारी ॥२॥

त्रिशक्ति त्रिमार्ग त्रिलोकसुन्दरी
कामाक्षी मीनाक्षी कन्याकुमारी
पर संविन्मयि श्रीमातेश्वरी ॥३॥

श्री जगदम्बे सरस्वति

श्री जगदम्बे सरस्वति
संवित् स्वरूपिणि पालय माम् ॥ध्रुवपद॥

वीणावादिनि सरस्वति,
वेद विलासिनि पालय माम्
विद्यादायिनि सरस्वति,
विनय स्वरूपिणि पालय माम्
(विवेक स्वरूपिणि पालय माम्) ॥१॥

हंसवाहिनि सरस्वति,
हृदय विकासिनि पालय माम्
स्फाटिकमालिनि सरस्वति,
सत्त्वस्वरूपिणि पालय माम्
(शान्त स्वरूपिणि पालय माम्) ॥२॥

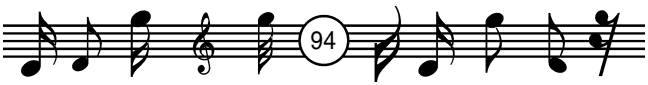

अपार करुणे सरस्वति,
अमृत वर्षिणि पालय माम्
अचिंत्य शक्ते सरस्वति,
अक्षर रूपिणि पालय माम्
(आनंद रूपिणि पालय माम्) ॥३॥

भगवती देवी सरस्वति,
ब्रह्मार्धांगिनि पालय माम्
पापविनाशिनि सरस्वति,
प्रज्ञारूपिणि पालय माम्
(पुण्य स्वरूपिणि पालय माम्) ॥४॥

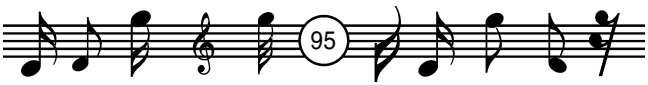

नारायणि नमोस्तु ते

नारायणि नमोस्तु ते ॥ध्रुवपद॥

ब्रह्माणि चाष्टमातृके प्रचण्डधाम चण्डिके ।
दयार्द्रलोल लोचनि हरार्धहृत शरीरिणि ॥१॥

कैवल्यनाथरंजनि महाभयप्रभंजनि ।
कल्याणि कामपोषणि महाविभूति भूषणि ॥२॥

क्षुधा तृष्णा क्षमा भ्रमा श्रद्धा निद्रा भद्रा प्रमा ।
सुकान्ति शान्ति व्यापिनि सदा संवित् स्वरूपिणि ॥३॥

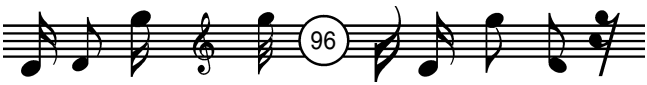

हंसवाहिनी देवी अम्बा सरस्वती

हंसवाहिनी देवी अम्बा सरस्वती
वर्णमालिनी देवी अम्बा सरस्वती ॥ध्रुवपद॥

वीणावादिनी वाणी अम्बा सरस्वती
वेदान्तार्थ विधायिनी अम्बा सरस्वती ॥१॥

धवलकमल वन-वासिनी अम्बा सरस्वती
कविता-गान-विलासिनी अम्बा सरस्वती ॥२॥

शंकर विनुता शारदा अम्बा सरस्वती
संवित्साधक-शुभदा अम्बा सरस्वती ॥३॥

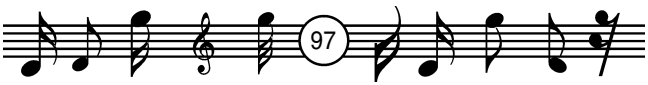

जयति गिरिराजेश्वरी

जयति गिरिराजेश्वरी मम हृदयपंकजवासिनी ।
शिव-गिरीश्वर-स्वामिनी श्रीसंविद्धाम-विलासिनी
॥१॥

देवी हैमवती उमा सामश्रुता गुरुरूपिणी ।
शुद्धब्रह्मविमर्शिनी शिवभक्ति भाव-विकासिनी ॥२॥

दक्षयज्ञविनाशिनी दाक्षायणी योगेश्वरी ।
देवकार्य विधायिनी गणनाथ-गुहमातेश्वरी ॥३॥

दुर्व्यसन दुर्वासनामल-दुःखदोष-निवारिणी ।
दिव्यसंवित् स्फूर्तिदा शिवदा सदासुखकारिणी ॥४॥

ध्यानतपसा तर्पिता यतिपूजिता ज्ञानार्जिता ।
संविद्धामविराजिता गिरिजा जयत्यपराजिता ॥५॥

गिरिराजेश्वरीगीतं साधकानां हितप्रदम् ।
संविदीश्वरभिक्षुणा कृतं देवी प्रसादजम् ॥६॥

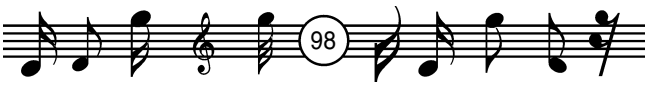

गिरिराजेश्वरी सुप्रभातं

गिरिराजेश्वरी सुप्रभातं
रविपुरराज्ञी सुप्रभातम् ॥ध्रुव॥

करिमुखगुहाम्ब करुणापांगैः
परिपालनाय सुप्रभातम् ॥१॥

अवलोकय तव सेवानिरतान्
भवतापशमनि सुप्रभातम् ॥२॥

प्रातर्गिरीश्वराराधनाय
सुसज्जिता कुरु सुप्रभातम् ॥३॥

संवित्साधक हृदये स्फुरतु
शिवतेजोमय सुप्रभातम् ॥४॥

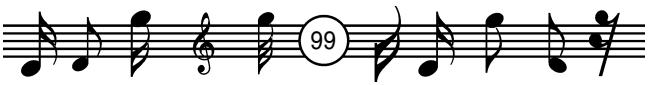

जागृही जननि

जागृही जननि, जागृही कुंडलिनि ॥ध्रुव॥

चारदल पद्मद्वार, खोल मूलाधार
जागृही महाराज्ञि, जागृही कुलाग्नि ॥१॥

हृदयाब्ज द्वादशार, भ्रमर ह्रींकार ।
जागृही नवनादिनि, जागृही चित्प्रसादिनि ॥२॥

श्रृंगार सोमप्रकार, स्फुरित सहस्रार ।
जागृही सुधाझरी, जागृही जगदीश्वरी ।
जागृही संविदीश्वरी ॥३॥

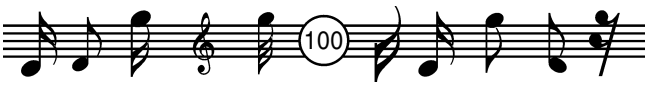

पराशक्ति जननी अम्बा

पराशक्ति जननी अम्बा पराशक्ति जननी ।
जनपरिपालिनी हिमपर्वतकुमारी ॥ ध्रुव ॥

सुरार्तिहारिणी दयार्द्रलोचनी
सुन्दरी शुभकरी श्री हरिसोदरी ॥ परा ॥

माया शिवजाया मरकतलतिक कमनीय
श्रेया अप्रमेया कुलनेया श्रुतिशतगेया
ध्येया सुधिया समयाराध्या
श्रीमाता संविदानन्दकाया ॥ परा ॥

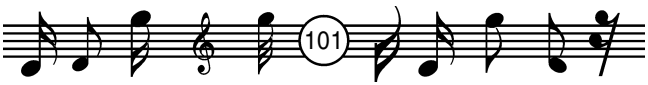

सकलभुवन व्यापिनी संविदम्बा

सकलभुवन व्यापिनी संविदम्बा
श्रीशैल वनवासिनी भ्रमराम्बा ॥ ध्रुव ॥

असंख्यषट्पद सैन्यकदम्बा
अरुणासुरघातिनी भ्रमराम्बा ॥ १ ॥

हेमविभूषित पृथुलनितम्बा
हराब्जमुखलोला भ्रमराम्बा ॥ २ ॥

ह्रींकारी मनुमयी प्रणवाम्बा
हृदयकमलसदना भ्रमराम्बा ॥३॥

शास्त्रसुमन मकरन्दप्रियाम्बा
संवित् सुधापायिनी भ्रमराम्बा ॥४॥

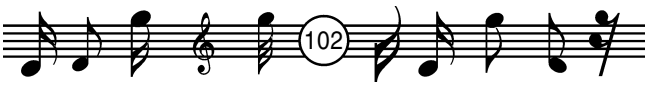

जय जय गिरिराजेश्वरी माँ

जय जय गिरिराजेश्वरी माँ
जय जय गिरिराजेश्वरी माँ ॥ध्रुव॥

शंकरगुरु संपूजित माँ
सन्तत भक्ति समार्जित माँ ।
संवित्द्विजालिकूजित माँ
संविद्धाम विराजित माँ ॥१॥

करकमलाभयदान करे
नयनाम्बुद करुणा बरसे ।
चरणारविन्द शरण प्रदे
नित्य दिव्य शुभदर्शन दे ॥२॥

सुवर्णरजताभरणयुते
सुवर्णमुकुटे स्वर्णलते ।
सुवर्ण जयन्ती संवलिते
हृदयालवाल संविल्लते ॥३॥

प्रसीद प्रसीद शैलसुते ॥

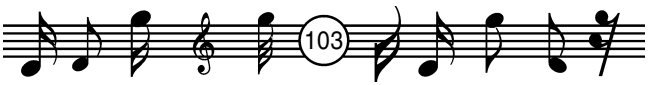

हरिकीर्तन

ध्येयो नारायणः सदा

ध्येयो नारायणः सदा
आलोड्य सर्वशास्त्राणि
विचार्य च पुनः पुनः
इदमेकं सुनिष्पन्नम् ॥ध्रुवपद॥

नारायणो गुरोर्गुरुः
गन्ता नारायणो नरः
नारायणः परो ध्याता ।
ध्यानं नारायणात्मकम् ॥१॥

नारायणं यजामहे
वासुदेवं च धीमहि
तत्त्वं नः पुरुषोत्तमः
तन्नोविष्णुः प्रचोदयात् ॥२॥

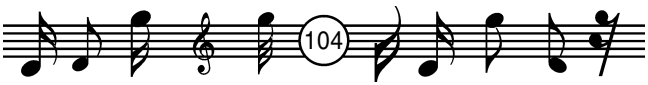

नारायणं महाज्ञेयम्
विश्वात्मानं परायणम्
नारायणं परंब्रह्म
भक्त्या चित्ते सदाश्रय ॥३॥

अन्तर्बहिश्च यत् सर्वम्
व्याप्य नारायणः स्थितः
अन्यत् सर्वं परित्यज
आत्मानं हरिमाभज ॥४॥

(आनन्दं शिवमाभज
देवं नारायणं भज
सद्गुरुं नारायणं भज
संविन्नारायणं भज) – अवान्तर ध्वनि

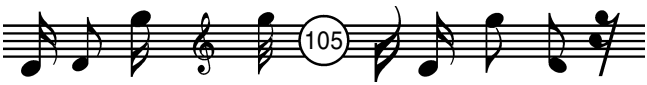

अयोध्यावासी राम

अयोध्यावासी राम नमो,
गोकुलवासी कृष्ण नमो ॥ध्रुवपद॥

कौसल्यासुत राम नमो,
देवकीनन्दन कृष्ण नमो
सीतालिंगित राम नमो,
रुक्मिणि वल्लभ कृष्ण नमो ॥१॥

दण्डकवनचर राम नमो,
वृन्दावन चर कृष्ण नमो
खरदूषणहर राम नमो,
कालियमर्दन कृष्ण नमो ॥२॥

रावण घातक राम नमो,
कंसध्वंसक कृष्ण नमो
हनुमत-सेवित राम नमो,
अर्जुनपूजित कृष्ण नमो ॥३॥

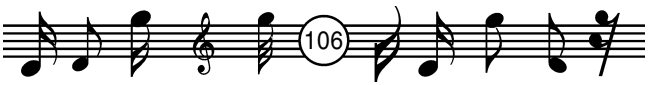

चापबाणधर राम नमो,
शंखचक्रधर कृष्ण नमो
धर्मस्थापन राम नमो,
भूभार हरण कृष्ण नमो ॥४॥

अगणित गुणगण राम नमो,
अनुपम सुन्दर कृष्ण नमो
अखिलचराचर राम नमो,
आनन्दामृत कृष्ण नमो ॥५॥

जय जय जय जय राम नमो,
जय जय जय जय कृष्ण नमो
जय जय जय जय राम नमो,
जय जय जय जय कृष्ण नमो ॥६॥

धुन : पूर्व ध्वनि - जय राम नमो,
उत्तर ध्वनि - जय कृष्ण नमो

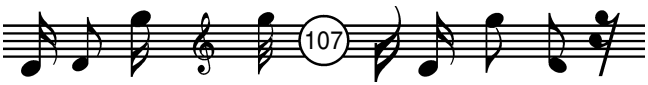

जय मधुसूदन

जय मधुसूदन राघव वामन
दीन दयाघन पालय माम् ॥ध्रुवपद॥

गोकुलपालक गोपतिबालक,
पाण्डवश्यालक पालय माम्
गोविन्द माधव गोपाल केशव,
नरसिंहाच्युत पालय माम् ॥१॥

दशरथनन्दन राजीवलोचन,
मुनिमनमोहन पालय माम्
दशमुखमर्दन भक्तजनावन,
धर्मविवर्धन पालय माम् ॥२॥

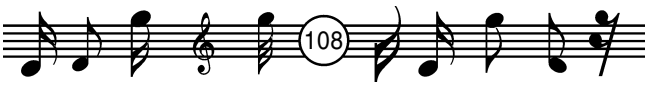

नवनीतचोर सुन्दर नटवर,
मन्दर-गिरिधर पालय माम्
व्रजयुवतीवर भुवन मनोहर,
वृन्दावनचर पालय माम् ॥३॥

भूमिसुताप्रिय परमकृपालय,
राम राम जय पालय माम्
साधुजनप्रिय गुरुसंविन्मय,
संविद्रसमय पालय माम् ॥४॥

धुन : पूर्व ध्वनि - राम राम जय पालय माम्
उत्तर ध्वनि - कृष्ण कृष्ण जय पालय माम्

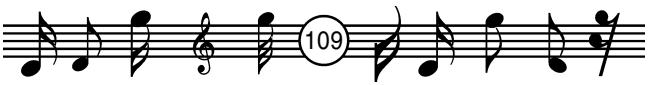

जय जय राम जय रघुराम

जय जय राम जय रघुराम
सीताराम श्रीरघुराम
राम राम राम राम ॥ध्रुवपद॥

पशुपति कार्मुक भंजन राम
नर वानर मुनि रंजन राम ॥१।

गौतम वनिता तारक राम
भक्त जन प्रिय कारक राम ॥२॥

अभय प्रदायक राजा राम
आनन्दात्मक स्वात्माराम ॥३॥

दशमुखमर्दन दुर्धर राम
धर्मस्थापन तत्पर राम ॥४॥

साकेतपुरी सुन्दर राम
संविन्न मधुरिम भर राम ॥५॥

धुन : पूर्व ध्वनि - सीताराम
उत्तर ध्वनि - श्री रघुराम

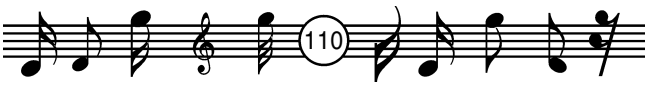

नारायण नारायण जय श्रीराम हरे

नारायण नारायण जय श्री राम हरे ।
नारायण नारायण जय घनश्याम हरे ॥ध्रुवपद॥

नैगमगानविनोद वेदस्तुतभूपाद
ध्वजवज्रांकुशपाद सुमित्रासुतसहमोद ॥१॥

दशरथवाग्धृतिभार दण्डकवनसंचार ।
सरयूतीरविहार सज्जनऋषिमन्दार ॥२॥

वालिविनिग्रहशौर्य वरसुग्रीवहितार्य ।
जलरुहदलनिभनेत्र जगदारंभकसूत्र ॥३॥

करुणापारावार वरुणालय गंभीर ।
दशरथराजकुमार दानवमदसंहार ॥४॥

पातकरजनीसंहर तवदासजनानुद्धर ।
हाटकमणिपीतांबर शरणं भव सीतावर ॥५॥

घननीरदसंकाश कृतकलिकल्मषनाश ।
मंजुलतुलसीभूष मायामानुषवेष ॥६॥

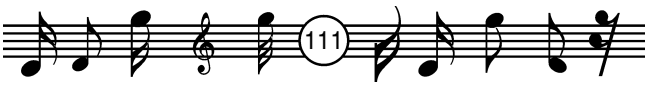

राम राम जय जय राम

राम राम जय जय राम बोलो जय जय राम
राष्ट्र-धर्ममूल राम बोलो जय जय राम ॥ध्रुवपद ॥

जय जय राम राजा राम
जय जय राम राघव राम
जय जय राम प्रचण्ड राम
जय जय राम कोदण्डराम
जय जय राम सुन्दर राम
जय जय राम सद्‌गुरु राम ॥१॥

राम राम जय जय राम बोलो जय जय राम
भारतात्म-भूत राम बोलो जय जय राम ॥२॥

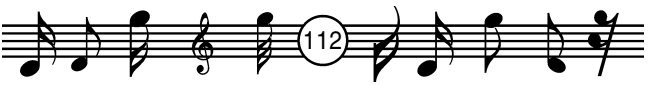

जय जय राम सीता राम
जय जय राम श्रीपति राम

जय जय राम जानकी राम
जय जय राम जीवन राम

जय जय राम पावन राम
जय जय राम कल्याण राम

राम राम जय जय राम बोलो जय जय राम
सार्वभौम संविद् राम बोलो जय जय राम ॥३॥

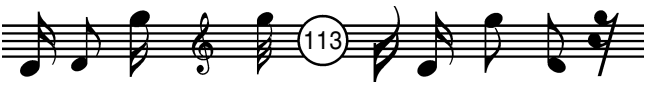

नमामि रघुनाथं

नमामि रघुनाथं नव जलधर श्यामम्
नमामि नमामि नमामि श्रीरामम् ॥ध्रुवपद॥

दशरथकुमारं नमामि श्रुति सारं
दशमुख संहारं नमामि श्रीरामम् ॥१॥

जनक सुतालोलं नमामि जगन्मूलं ।
नतजन परिपालं नमामि श्रीरामम् ॥२॥

नाशित भूभारं नमामि रणधीरं ।
संवित् सुखसारं नमामि श्रीरामम् ॥३॥

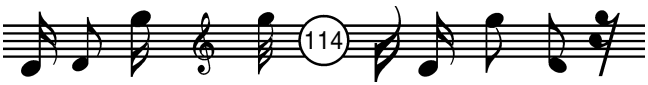

खेलति मम हृदये

खेलति मम हृदये रामः ॥ध्रुवपद॥

मोहमहार्णव – तारणकारी,
रागद्वेषमुखासुरमारी ॥१॥

शान्ति विदेहसुता, सहचारी,
दहरायोध्या–नगरविहारी
परमहंससाम्राज्योद्धारी,
सत्यज्ञानानन्द शरीरी
संवित्ज्ञानानन्द शरीरी ॥२॥

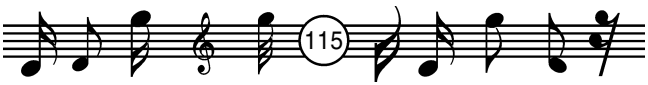

मरकत मणि श्याम

मरकत मणि श्याम मामव रघुराम । ॥ध्रुवपद॥

वारिवाह श्याम मामव रघुराम ।
रविनन्दन राम मामव रघुराम ॥१॥

वेद प्रणव धाम मामव रघुराम
विजित वैरिग्राम मामव रघुराम ॥२॥

असुर दलन भीम मामव रघुराम
साधुसुधा नाम मामव रघुराम ॥३॥

गुणकुसुमाराम मामव रघुराम ।
घन संविद्राम मामव रघुराम । ॥४॥

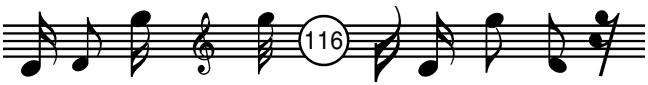

राम राम राम राम राम नामतारकं

राम राम राम राम राम नामतारकं
राम कृष्ण वासुदेव भक्तिमुक्तिदायकं ॥ध्रुव॥

जानकीमनोहरं सर्वलोकनायकम्
शंकरादि सेव्यमान-पुण्यनामकीर्तनम् ॥

वैदेहिवल्लभं वानरेशपूजितम्
साकेत-सूर्यपुरी-संवित्धाम राजितम् ॥

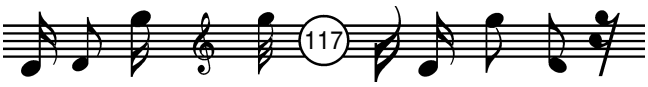

गोविन्द गोविन्द मुरहर

गोविन्द गोविन्द मुरहर कृष्ण
गोपाल गोपाल गिरिधर कृष्ण ॥ध्रुवपद॥

पाँचजन्य ध्वनि पूरण कृष्ण
मधुरमुरली निनादन कृष्ण ॥१॥

गोप वधूमनमोहन कृष्ण
पाण्डव मोहनिषूदन कृष्ण ॥२॥

नरकान्तक नरतनुधर कृष्ण
नारायण नरसहचर कृष्ण ॥३॥

जय जय भारत सौभाग्य कृष्ण
जय जय स्वानन्द-साम्राज्य कृष्ण ॥४॥

धुन : पूर्व ध्वनि - गोविन्द कृष्ण
उत्तर ध्वनि - गोपाल कृष्ण

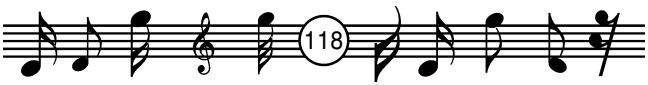

मन एक बार हरि बोल

मन एक बार हरि बोल
हरि बोल हरि बोल ॥ध्रुवपद॥

नन्दनन्दन हरि नलिननयन हरि ।
नारायण हरि बोल ॥१॥

श्यामसुन्दर हरि नटवर नरहरि
गिरिवरधर हरि बोल ॥२॥

चीरहरण हरि चीरदान हरि
भक्तभरण हरि बोल ॥३॥

शेषशयन हरि साधुशरण हरि
संविद् रमण हरि बोल ॥४॥

पूर्व ध्वनि – हरि हरि बोल
उत्तर ध्वनि – हरि हरि हरि बोल

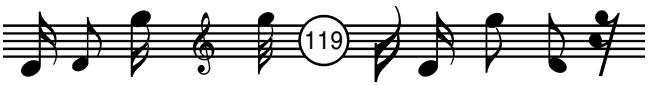

मुरहर गिरिधर

मुरहर गिरिधर गोविन्द गोविन्द
मुकुन्दमाधव गोविन्द गोविन्द ॥ध्रुवपद॥

कमलावल्लभ गोविन्द गोविन्द
धृतमणि कौस्तुभ गोविन्द गोविन्द
पुरुषोत्तम हरे गोविन्द गोविन्द
श्रीकृष्णा श्रीपते गोविन्द गोविन्द ॥१॥

भक्त जनावन गोविन्द गोविन्द
ब्रह्मानन्दघन गोविन्द गोविन्द
नवनीतानन गोविन्द गोविन्द
नित्य निरंजन गोविन्द गोविन्द ॥२॥

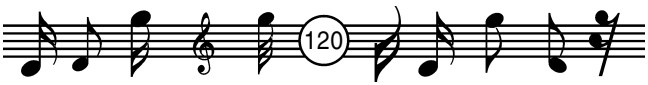

वसुदेवात्मज गोविन्द गोविन्द
यदुकुल पंकज गोविन्द गोविन्द
सकलासुरहर गोविन्द गोविन्द
संवित् सुधाकर गोविन्द गोविन्द ॥३॥

धुन :- पूर्व ध्वनि - गोविन्द गोविन्द
उत्तर ध्वनि - गिरिधर गोविन्द

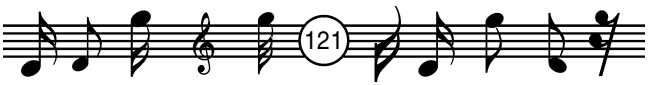

श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ध्रुवपद॥

वसुदेवकुमारं जगद्गुरुम्
व्रजभूमिविहारं जगद्गुरुम्
गोपी चित्तचोरं जगद्गुरुम्
गीताकर्तारं जगद्गुरुम् ॥१॥

तुलसीवनमालं जगद्गुरुम्
बृन्दावन लीलं जगद्गुरुम्
दुर्योधन कालं जगद्गुरुम्
कुन्तीसुतपालं जगद्गुरुम् ॥२॥

पद्मापतिमीशं जगद्गुरुम्
परमात्मप्रकाशं जगद्गुरुम्
कलिकल्मषनाशं जगद्गुरुम्
करुणामृतवर्षं जगद्गुरुम् ॥३॥

नवनीरदश्यामं जगद्गुरुम्
गोकुलजनकामं जगद्गुरुम्
बलि मर्दन वामं जगद्गुरुम्
ममहृदयारामं जगद्गुरुम् ॥४॥

करलालित वेत्रं जगद्गुरुम्
पांडवप्रिय मित्रं जगद्गुरुम्
सरसिज समनेत्रं जगद्गुरुम्
संविन्मय गात्रं जगद्गुरुम् ॥५॥

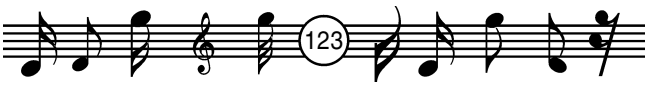

व्रज बालकृष्ण नन्दलाल

व्रज बालकृष्ण नन्दलाल गोविन्द गिरिधारि ॥ध्रुवपद ॥

वसुदेवसुत विजयपाल गोविन्द गिरिधारि
मनमोहन मुरलीलोल गोविन्द गिरिधारि
मधुसूधन मदनगोपाल गोविन्द गिरिधारि ॥१॥

यदुनाथ मुकुन्द मुरारि गोविन्द गिरिधारि
यमुनातटकुंज-विहारि गोविन्द गिरिधारि
यतितारक दितिज संहारी गोविन्द गिरिधारि ॥२॥

व्रजगोकुल जनाभिराम गोविन्द गिरिधारि
करुणाकर नवघनश्याम गोविन्द गिरिधारि
संवित् गुण मंगलधाम गोविन्द गिरिधारि ॥३॥

श्रीगीताचार्यं भजाम्हम्

श्रीगीताचार्यं भजाम्यहम् ॥ध्रुवपद॥

जगदानन्दांकुर – घनश्यामम्
धिक्कृत विद्युच्चंचल – नयनम्
सर्वान्तरतम – परमात्मानम् ॥१॥

स्फुरदम्भोरुह – मंगलवदनम्
करुणारस – परिपूरित – हृदयम्
गीतागंगाधर – धृतवपुषम् ॥२॥

प्रकटित – चिन्मुद्रांचितपाणिम्
वेदान्तामृत – वर्षणवाणीम्
उद्घाटित निः श्रेयस श्रेणीम् ॥३॥

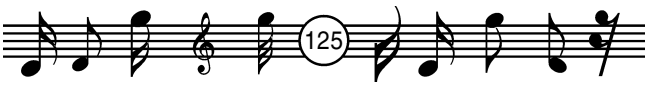

आज सखी सुन

आज सखी सुन कहाँ से आयी,
नूपुर की झन्कार
मधुर मधुर झन्कार,
संविन्मय झन्कार ॥ध्रुवपद॥

कदमतले यह कौन सांवरिया,
मोर मुकुट सिर अधर बसरिया
नाच रहा है री नटवरिया,
गले वैजयन्ती हार ॥१॥

सुन सखि कैसी मुरली बजायी,
वृन्दावन में आग लगायी
दर्शन को सब सृष्टि आयी,
झूम गया संसार ॥२॥

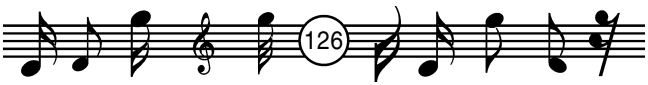

क्या सखि ये है कृष्ण मुरारी,
कालिय मर्दन गोकुलचारी
गोपिवल्लभ हृदयविहारी,
नाचे नन्दकुमार ॥३॥

दीनन के प्रभु गिरिधर नागर,
दामोदर हरि करुणा सागर
हम हैं हरि चरणन के चाकर,
हरि सब जीवन सार
(हरि संवित् सुखसार) ॥४॥

श्री राधेगोविन्दा गोपाला

श्रीराधेगोविन्दा गोपाला
तेरा प्यारा नाम है ॥ध्रुवपद॥

यमुना किनारे कृष्णकन्हैया
मुरली मधुर बजाये ।
गोपगोपिका निजघर छोड़
कन्हैया पास पधारे ।
मनमोहनवाले हो गोपाला
तेरा प्यारा गान है ॥१॥

माखनचोर कन्हैया गोपी
घर-घर लूटन जावे ।
ग्वालबाल के साथ कन्हैया
माखनमिश्री खाये ।
तुम प्रेम के भूखे हो गोपाला
तेरा प्यारा काम है ॥२॥

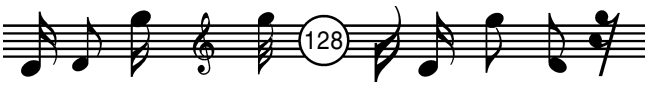

द्रुपद-सुता ने तुम्हें पुकारा
आकर लाज बचाये ।
अर्जुन के मनमोह मिटाने
गीता वचन सुनाये ।
तुम योगेश्वरगुरु हो गोपाला
तेरा प्यारा ज्ञान है ॥३॥

मीरा को द्वारिका बुलाकर
अपने में ही समाये ।
सूरदास को ज्ञान चक्षु दे
दर्शन दिव्य दिखाये ।
तुम संविज्ज्योती हो गोपाला
तेरा प्यारा धाम है ॥

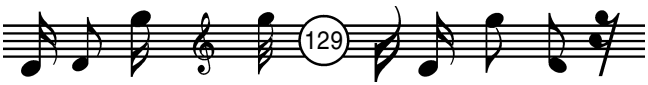

विविध देवता कीर्तन

गणेश कीर्तन

पाहि पाहि गजानन, पार्वतीनन्दन गजानन
गजानन गजवदन, गौरीनन्दन गजानन ॥ध्रुवपद ॥

मूषकवाहन गजानन, मोदकाशन गजानन
महेश्वरात्मज गजानन, मामुद्धर जय गजानन ॥१॥

प्रपंचकारण गजानन, पुराणवारणगजानन,
पाशांकुशधर गजानन, प्रणवरूप जय गजानन ॥२॥

षडाननाग्रज गजानन, शुभांग सुन्दर गजानन
सिद्धि बुद्धिप्रद गजानन, निर्विघ्नं कुरु गजानन ॥३॥

गजासुरान्तक गजानन, गणाधीश जय गजानन
जय जय जय जय गजानन, संविद् रूप जय गजानन
॥४॥

धुन : पूर्व ध्वनि – पार्वतीनन्दन गजानन
उत्तर ध्वनि – गौरीनन्दन गजानन

जय श्री गणेश

जय श्री गणेश गौरी गणेश
विघ्न विनाशक विद्या गणेश ॥ध्रुवपद॥

गिरिजासुपुत्र मुनि व्यास मित्र
गजराजवक्त्र लीला विचित्र ॥१॥

कैलासवास कमनीय वेष
कलितेन्दुभाल तुण्डाग्रलोल ॥२॥

ओंकाररूप बुद्धि प्रदीप
अमित प्रताप संवित् स्वरूप ॥३॥

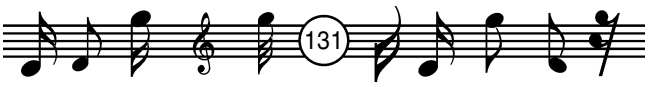

गजानन जय षडानन

गजानन जय षडानन
संकटसागर - समुद्धरण ॥ध्रुवपद॥

पद्मासन जय चतुरानन
पन्नगशयन नारायण
पंकज नयन श्री रमण ॥१॥

पंचानन जय वृषभासन
विषमनयन पार्वतीरमण
त्रिलोचन त्रिपुरारमण ॥२॥

गुरुचरण जयभयहरण
ग्रन्थिविमोचन परायण
संविद् घन समरसरमण

धुन : पूर्व ध्वनि - श्रीगुरुचरण
उत्तर ध्वनि - समरसरमण

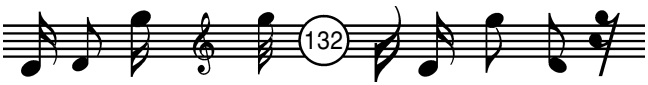

गणपति प्रियगौरी के

गणपति प्रियगौरी के गजमुखगुरु जय जय
सेनापति देवों के षण्मुखगुरु जय जय ॥ध्रुवपद॥

ग्रहपति प्रिय कमलों के दिनकरगुरु जय जय
वाचस्पति वेदों के ब्रह्मागुरु जय जय ॥१॥

पशुपति रिपु त्रिपुरों के शंकरगुरु जय जय
श्रीपति पति भुवनों के केशवगुरु जय जय ॥२॥

नगपतिकुलज्योति श्रीमातागुरु जय जय
जीवनपति शिष्यों के संविद्गुरु जय जय ॥३॥

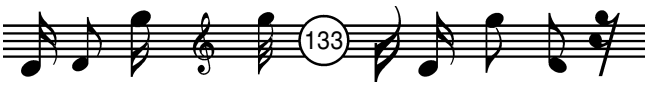

गणेश जिनका नाम है

गणेश जिनका नाम है कैलास जिनका धाम है
ऐसे गिरिजानन्दन को हमारा यह प्रणाम है
ऐसे सिद्धिदाता को हमारा यह प्रणाम है ॥१॥

शंकर जिनका नाम है काशी जिनका धाम है
ऐसे उमामहेश्वर को हमारा यह प्रणाम है
ऐसे मुक्तिदाता को हमारा यह प्रणाम है ॥२॥

राम जिनका नाम है अयोध्या जिनका धाम है
ऐसे दशरथनन्दन को हमारा यह प्रणाम है
ऐसे शान्तिदाता को हमारा यह प्रणाम है ॥३॥

कृष्ण जिनका नाम है गोकुल जिनका धाम है
ऐसे देवकीनन्दन को हमारा यह प्रणाम है
ऐसे भक्तिदाता को हमारा यह प्रणाम है ॥४॥

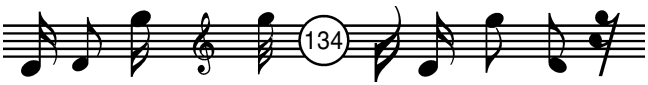

अम्बा जिनका नाम है अर्बुद जिनका धाम है
ऐसी हिमगिरिनन्दिनि को हमारा यह प्रणाम है
ऐसी शक्तिदाता को हमारा यह प्रणाम है ॥५॥

संवित् जिनका नाम है हृदय में जिनका धाम है
ऐसे श्री गुरुदेव को हमारा यह प्रणाम है
ऐसे आनन्ददाता को हमारा बारं बार प्रणाम है ॥६॥

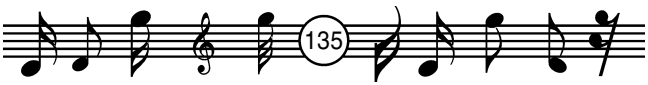

आञ्जनेय आञ्जनेय नमो भगवन्त

आञ्जनेय आञ्जनेय नमो भगवन्त
आत्मबुद्धि बलदाता नमो हनुमन्त ॥ ध्रुवपद ॥

हनुमंत हनुमंत नमो रामदास ।
राम भक्ति मतिदाता नमो वानरेश ॥१॥

वानरेश वानरेश नमो वायु पुत्र
संविद् भजन रस पूर्ण पद्मपत्र नेत्र ॥२॥

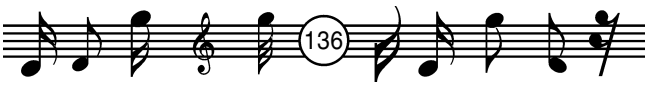

आञ्जनेय स्वामी

आञ्जनेय स्वामी सतत भजन निरत
आत्माराम मुने सीतापति दूत ॥ध्रुवपद ॥

सागरतरण रिपुदल हरण ।
सज्जन भरण नमो नमो ॥
वानर प्रवर वज्र शरीर
पवन कुमार नमो नमो ॥१॥

लक्ष्मण पालक लंका दाहक ।
जानकी मोहक नमो नमो ॥
संवित् साधक प्रेरक सेवक ।
आदर्शात्मक नमो नमो ॥२॥

कपिगण-सेवित तरुणाराधित
कविवर-संस्तुत नमो नमो ॥
बुद्धिमतांवर सिद्धिवराकर ।
संवित् सुन्दर नमो नमो ॥३॥

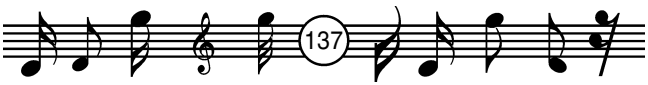

रक्षे मा चल

रक्षे मा चल मा चल मा चल
धर्ममयी तुम जीवन सम्बल ॥ध्रुवपद ॥

महाबली कर शोभित तुम हो
विष्णु प्रियव्रत प्रेरक तुम हो
यज्ञमयी तुम सदा सुमंगल
रक्षे मा चल... ॥१॥

हम स्वीकारेंगे तव बन्धन
विश्व मित्रता-भाव विवर्धन
स्नेहमयी तुम सुदृढ़ कोमल
रक्षे मा चल... ॥२॥

श्रद्धा भक्ति ध्यान त्रिगुणिता
शिव गुरु शास्त्र प्रसाद प्रणीता
सूत्रमयी संवित् तुम निर्मल
रक्षे मा चल... ॥३॥

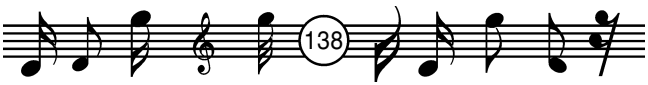

तुंग तरंगे गंगे

तुंग तरंगे गंगे
जय तुंग तरंगे गंगे ॥ध्रुवपद॥

कमल – भवाण्ड – करण्ड पवित्रे ।
बहुविध – बंधन – छेतृलवित्रे ॥१॥

दूरीकृत – जन–पाप समूहे ।
पूरित – कच्छप – गुच्छग्राहे ॥२॥

परमहंस गुरु – प्रमोद पात्रे ।
ब्रह्मद्रव – संविन्मय – गात्रे ॥३॥

धुन : पूर्व ध्वनि – तुंग तरंगे
उत्तर ध्वनि – जय जय गंगे ॥

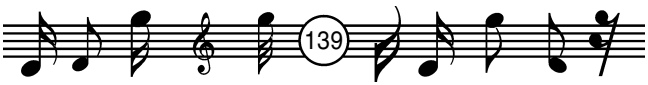

गंगे गंगे हर हर गंगे

गंगे गंगे हर हर हर गंगे
यमुने यमुने जय जय जय यमुने ॥ध्रुवपद॥

भागीरथि, भवतारिणि गंगे
तपनात्मजे तमोहारिणि यमुने ॥१॥

मन्दाकिनि, मकरासने गंगे
कालिन्दी व्रजभू वासिनि यमुने ॥२॥

धवलप्रभे त्रिपथगे गंगे
श्यामले शौरी सुखदे यमुने ॥३॥

शिव जटाजूट वल्लरि गंगे
श्री कृष्ण लीला लहरि यमुने ॥४॥

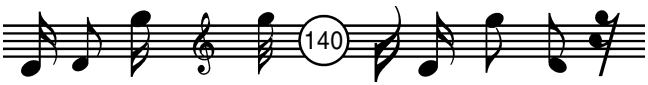

पावन कर दो तन मन को गंगे
पार लगादो नय्या को यमुने ॥५॥

संविन्मयिशक्ति वाहिनी गंगे
संविद्गुरुभक्ति दायिनि यमुने ॥६॥

धुन : गंगे गंगे हर हर गंगे
यमुने यमुने जय जय यमुने

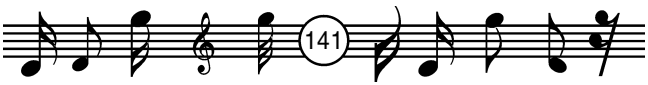

शर्मदे वर्मदे

शर्मदे वर्मदे नमो नमो नर्मदे
साधन संपत् प्रदे संपदे नर्मदे ॥ध्रुवपद ॥

शंभुजटासंभूते सुरसरिते नर्मदे
शौनक श्रीशंकरादि गुरुगीते नर्मदे
सुरसरिते गुरुगीते हरतीर्थे नर्मदे ॥१॥

शमदमादियुक्तानां शुभंकरि नर्मदे
शिव भक्ति रहितानां भयंकरि नर्मदे
शुभंकरि भयंकरि शिवंकरि नर्मदे ॥२॥

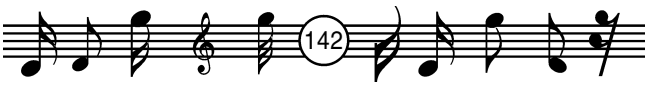

नित्यसेवनेन योगसिद्धिदे नर्मदे
दर्शनेन स्पर्शनेन शुद्धिदे नर्मदे
सिद्धिदे शुद्धिदे मुक्तिदे नर्मदे ॥३॥

शैलखण्डनोद्दण्ड, चण्डबले नर्मदे
सागरसंगमकाम, सुचंचले नर्मदे
चण्डबले सुचंचले संवित्कले नर्मदे ॥४॥

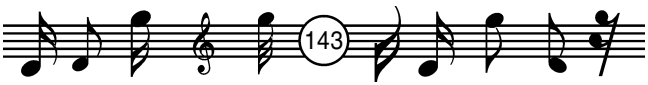

ज्योतिषां ज्योतिरेका

ज्योतिषां ज्योतिरेका
जयति जयति सा काशिका ॥ध्रुवपद॥

मृत्युशुभंकरी विश्वेशपुरी
कृपाकिशोरी काशिका
मोक्षवितरणा तारकश्रवणा
मणिकर्णिका काशिका ॥१॥

वाराणसीति विख्याता
शिवाविमुक्ता काशिका
विशालनेत्रा दृष्टिपवित्रा
सुवर्णगात्रा काशिका ॥२॥

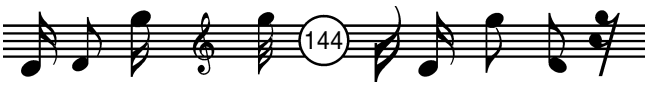

परमशिवाज्ञा ब्रह्मप्रज्ञा
भैरवतन्त्रा काशिका
उत्तरवाहिनी गङ्गाह्लादिनी
ओंकारमयी काशिका ॥३॥

अनादिनिधना आनन्दवना
महाश्मशाना काशिका ।
अन्नपूर्णाकृपापूर्णा
आत्मसंवित् काशिका ॥४॥
(पूर्ण संवित् काशिका)

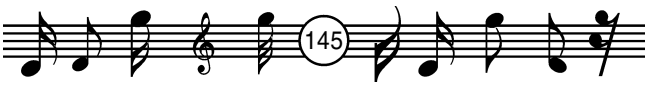

योगेश्वर का गुरु वेश मधुर

योगेश्वर का गुरु वेश मधुर
गीतामृत का उपदेश मधुर ॥ध्रुवपद॥

एकादशी का वह काल मधुर
रणवाद्य मृदंग का ताल मधुर
श्वेताश्वों की द्रुत चाल मधुर
हरि गले में तुलसी माला मधुर ।
गीता दर्शन सम्पूर्ण मधुर ॥१॥

रणमंच बना कुरुक्षेत्र मधुर
उस नाटक में हर पात्र मधुर ।
प्रभु हाथों प्रग्रह-सूत्र मधुर ।
वंशी की जगह कर-वेत्र मधुर ॥२॥
गीता दर्शन.....

कौन्तेय के हाथ कमान मधुर ।
ध्वज में राजित हनुमान मधुर ।
हरिमुख-मण्डल मुस्कान मधुर ।
प्रस्थान मधुर व्याख्यान मधुर ॥३॥

गीता दर्शन.....

भारत का शोक-विषाद मधुर
संजय को व्यास-प्रसाद मधुर
कृष्णार्जुन का संवाद मधुर
अद्वैत मधुर आह्लाद मधुर ॥४॥
गीता दर्शन.....

प्रज्ञा-तूणीर के तीर मधुर
गुरुवाणी की तलवार मधुर
योगोपरि - योगप्रहार मधुर
विस्तार मधुर परिहार मधुर ॥५॥
गीता दर्शन.....

जगदीश-अनन्त-विभूति मधुर
देदीप्य विराट्-अनुभूति मधुर
पुरुषोत्तम-पद की प्राप्ति मधुर
ध्रुव नीति मधुर श्रीभूति मधुर ॥६॥
गीता दर्शन.....

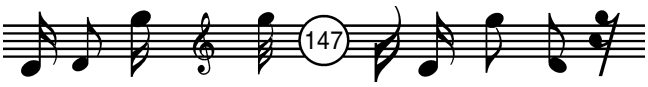

भगवद्गीता ज्ञान प्रवाह

भगवद्गीता ज्ञान प्रवाह
भारत संवित् तीर्थ प्रयाग ।
कीर्तन चिन्तन मज्जन से
निर्मल संविन्मय जन हैं ॥ध्रुवपद॥

वेदागम - स्मृति - शास्त्र - प्रमाण
घनीभूत गीता - प्रस्थान ।
शिष्याचार्य - शास्त्र - प्रसाद
रसमय कृष्णार्जुन - संवाद ॥१॥

आत्मेश्वरगुरु की वाणी
एक हुई ब्रह्म - त्रिवेणी ।
कर्म - भक्ति- विज्ञान - गति
एक जहाँ शरणागति ॥२॥

तत् त्वं असि के पदत्रय
एक जहाँ संगीत लय ।
सत्ता स्फुरत्ता सुख सरिता
संगम संवित् सागरता ॥३॥

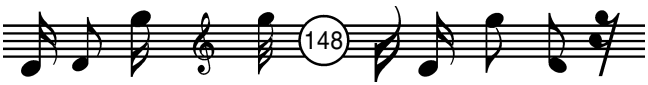

जाने क्या जादू भरा

जाने क्या जादू भरा हुआ
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ।
मन चमन हमारा हरा हुआ,
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥ध्रुवपद ॥

जब शोक मोह से घिर जाते,
तब गीता वचन हृदय लाते
कब का भव सारा तरा हुआ,
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥१॥

गीता ग्रंथों में न्यारी है,
श्रुति युक्ति के अनुसारी है ।
युग युग का अनुभव जुड़ा हुआ,
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥२॥

गीता संतों का जीवन है,
गंगा से भी अति पावन है ।
संविद् रस सागर भरा हुआ,
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥३॥

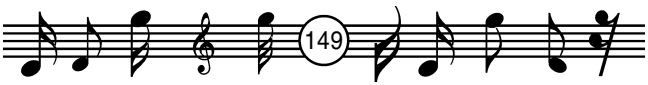

भगवद्गीते भवभय हारिणि

भगवद्गीते भवभय हारिणि
जय जगदम्बे संवित् स्वरूपिणि ॥ध्रुवगीता ॥

अष्टादशभुज-शोभा धारिणि
योगेश्वर हरि-हृदय विलासिनि ॥१॥

आगमनिगम-सन्देश प्रकाशिनि
आराधक-मनः-संशय छेदिनि ॥२॥

सहजनिजात्मानन्द प्रदायिनि
संवित् परायण-पथ सन्दर्शिनि ॥३॥

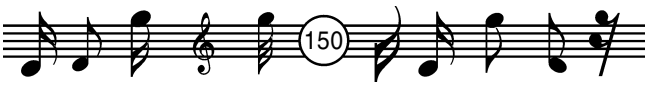

जय सूरज सब के

जय सूरज सब के उजियारे
तरुणार्क देव इष्ट हमारे ।
नारायण आदित्य प्रभाकर
परब्रह्म प्रत्यक्ष हमारे
उत्तरायण मार्ग निखारे ॥ध्रुवपद॥

तेजोमय रवि कश्यप-नन्दन
माँ अदिति के राजदुलारे ।
प्रचण्ड तुम मार्तण्ड देव हो
अग्नि-पिण्ड ब्रह्माण्ड सहारे ॥१॥

ज्योति अखण्ड अनन्त तुम्हारी
खण्ड खण्ड ग्रह उपग्रह तारे ।
दिव्य रश्मियों के दर्शन में
ऋषिमुनियों ने तत्त्व विचारे ॥२॥

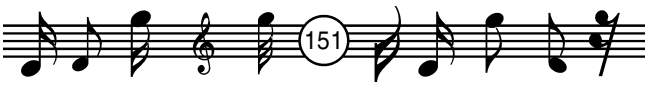

सब के मित्र त्रिकाल विधाता
सभी देव प्रिय प्राण हमारे ।
क्षण क्षण के अणु अणु में व्यापक
तन-मन सबके रोग निवारे ॥३॥

रसबरसाते सस्य पकाते
प्राणपुष्टिकर सबके प्यारे ।
हम को निर्मल बुद्धि ज्ञान दे
संवित् गुरु तम पार उतारे ॥४॥

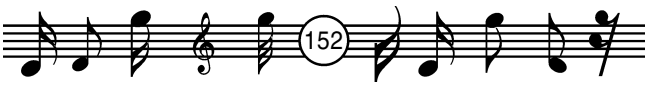

अर्बुद के उन्मुक्त गगन में (ध्वजगान)

अर्बुद के उन्मुक्त गगन में
संवित् ध्वज फहरे रे ॥ध्रुवपद॥

यह प्रतीक है चिद् विलास का
साधक व्यूह के नव विकास का ।
स्वर लहराता विश्वगान का
संवित् ध्वज फहरे रे
ऋषिमुनियों के दिव्यांगन में
संवित् ध्वज फहरे रे ॥१॥

शुचितन में तत्परता भरता
शुभ मन को तद्भाव वितरता ।
शरणागत को तन्मय करता
संवित् ध्वज फहरे रे
साधकजीवन हृदयांगन में
संवित् ध्वज फहरे रे ॥२॥

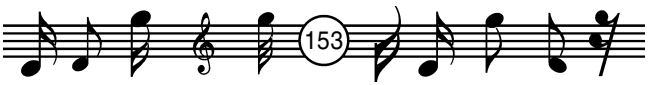

साधना कीर्तन

नवं नवं देवोवनम्

नवं नवं देवोवनम्
नमतां ददाति संवित्धनम् (सुसाधनम्) ॥ ध्रुव ॥

प्रथमं श्रद्धा शमो विवेकः
सत्संगश्च शास्त्रालोकः ।
संविन्निष्ठा नित्यसपर्या
शिवानुभूतिः समाधिचर्या ॥१॥

निमित्त मात्रं भवति साधकः
शरणापन्ने कोत्र बाधकः ।
त्यक्त्वाहंकृतं हर्षामर्षे
नन्दति वर्धति वर्षे वर्षे ॥२॥

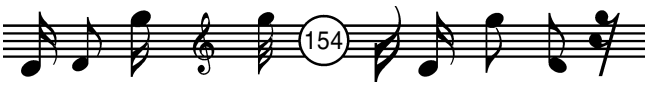

आओ सच्चे साधकों सी

आओ सच्चे साधकों सी साधना मिलकर करें
मुक्त हो युग संकटों से, प्रार्थना मिल कर करें ।
आओ कदमों को मिलायें, संवित् की निज ताल से
ध्येय की ओर बढे निरंतर, वीरों की द्रुत चाल से ॥१॥

संवित् के सामर्थ्य का अनुमान कुछ लगता नहीं
कौनसा संकट टला कब किसी को दिखता नहीं ।
संवित् की करुणा ही रक्षा करती है हर हाल से
झेल ली हर चोट जाती साधना की ढाल से ॥२॥

महाकाल ही खुद मिले हों जिन्हें गुरु के रूप में
गिर नहीं सकते कभी भी, विकारों के कूप में ।
झूझने की शक्ति पाते वे सहज ही काल से
चोट खुद ही उच्छल जाती, संवित् भक्ति उछाल से ॥३॥

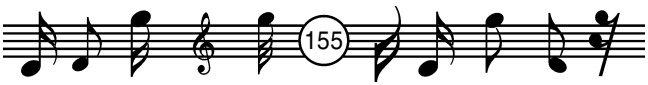

मार्ग बीहड़ जंगलों में बना देती गुरुकृपा
गहरे तम में ज्ञान दीपक जला देती गुरुकृपा ।
मुक्ति मिल जाती स्वयं ही माया भ्रम के जाल से
जीत लेते जीवन संग्राम पहले मृत्युकाल से ॥४॥

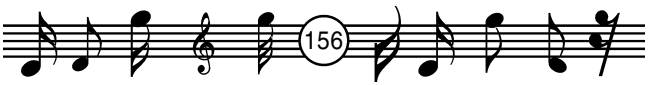

तन्मय हो जा मेरे मन

तन्मय हो जा मेरे मन, शिवमय हो जा मेरे मन

नील अनाविल मौन गगन
गीत सुनाता बहे पवन
अष्टमूर्ति का दिव्य नटन
अखिल जगत अनुपम आंगन
तन्मय हो जा मेरे मन, मुदमय हो जा मंगल मन ॥१॥

अनहत का अविरल स्पन्दन
गूंज रहे गिरि गह्वर वन
संवित् का उन्मुक्त सदन
करले साधो सतत भजन
तन्मय हो जा मेरे मन, रसमय हो जा मधुकर मन ॥२॥

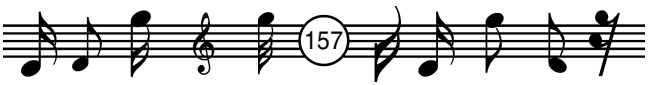

श्रीगुरु देते ज्ञानांजन
शान्तिप्रदायक शास्त्र वचन
अवन निरत अनवरत नयन
खोल रहे मन अवगुंठन
तन्मय हो जा मेरे मन, गुरुमय हो जा विनेय मन ॥३॥

जगन्मात का स्मित आनन
करता है अन्तस् पावन
वरले माँ की वरद शरण
संवित् सुखमय परिपूरण
तन्मय हो जा मेरे मन, चिन्मय हो जा उज्ज्वल मन ॥४॥

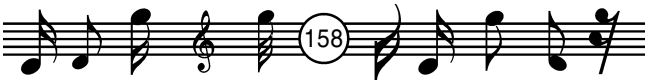

संवित् साधक बनेंगे हम

संवित् साधक बनेंगे हम
शास्त्र साधना करेंगे हम ॥ध्रुवपद॥

ले गुरु शीतल वचन कण
ध्यान लगाये रहेंगे हम
विद्यारूपी सागर के
सुन्दर मोती बनेंगे हम ॥१॥
(संवित् साधक .... ज्ञान साधना....)

सर्वशक्ति का स्त्रोतमय
संवित् सूर्य भेजेंगे हम
भारतविद्याप्रसरण की
प्रकाशकिरण बनेंगे हम ॥२॥
(संवित् साधक .... राष्ट्र साधना....)

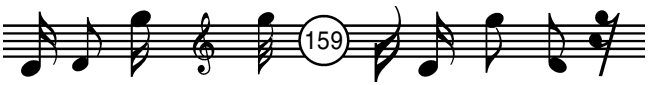

धीर बनो वीर बनो

धीर बनो वीर बनो मनुकुल आभरण बनो
संवित् तरुण संस्कृति का अरुणिम अंकुरण बनो
धीर बनो वीर बनो ॥ध्रुवपद ॥

धर्मधनुर्धरपार्थ तुल्य पूर्ण पात्र बनो
विश्वयजन में प्रभु का सन्निमित्त मात्र बनो
विश्वेश्वर शुश्रूषा निरत शुद्ध गात्र बनो
धीर बनो वीर बनो
धीर बनो वीर बनो गुरु की पतवार बनो
संशयरिपु संहारक श्रद्धा तलवार बनो ॥१॥

ऋषिपथ मर्यादा के रक्षक सत्पथिक बनो
भारत-उन्नायक आदर्शों के रसिक बनो
भरत - भगीरथ - वसिष्ठ - जनक से भी अधिक बनो
धीर बनो वीर बनो
धीर बनो वीर बनो भव्यगुणागार बनो
पुण्यभूमि भारत का नूतन उद्‌गार बनो ॥२॥

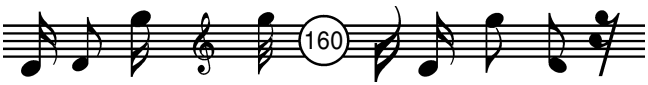

बुद्धिशल्य विरतिपर्ण युक्त चित्तबाण बनो
भक्ति भाव – ज्यानिनाद् झंकृत गतिमान बनो
देशिक –निर्दिष्ट –दिशा आहित मतिमान बनो
धीर बनो वीर बनो
धीर बनो वीर बनो प्रेरणा समीर बनो
ब्रह्मलक्ष्य भेदन को तीव्र तीक्ष्ण तीर बनो ॥३॥

व्यास से भी मेधावी कृष्ण से सुचारु बनो
तुहिनाद्रि से भी तुंग बृहद् देवदारु बनो
चिद्गगनचुम्बि तरु तन्मयताकार बनो
धीर बनो वीर बनो
धीर बनो वीर बनो संस्कृति का सार बनो
चिरसुन्दर संविन्मय पूर्णात्माकार बनो
धीर बनो वीर बनो ॥४॥

बढते जाना

बढते जाना बढते जाना
प्यारे तरुवर बढते जाना
(तरु गण सन्तत बढते जाना)
(लक्ष्य दिशा में बढ़ते जाना) ॥ध्रुवपद॥

चट्टानों को चीर पार कर
निष्ठा जड़ को दृढ़तर करना
मूक प्रार्थना की डाली को
सूरज उन्मुख करते जाना ॥१॥

झूठे सुख का प्यार भुलाकर
द्रोह मोह की होली जलाकर
केवल संवित् बल को लेकर
सच्चित् - सुख -साम्राज्य जीतना ॥२॥

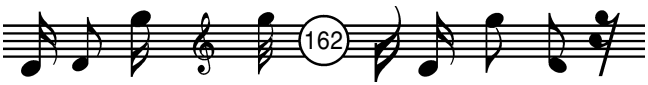

संविद्वन के शोभाधारी
सदाचार नभ के संचारी
फहराते जय हरितपताका
पाप – धूप का आतप हरना ॥३॥

रात अंधेरी कंटक पथ हो
गीत निराशा के मत गाना
संवित् की ध्रुव ज्योति जलाकर
ध्येय शिखर पर चढ़ते जाना ॥४॥

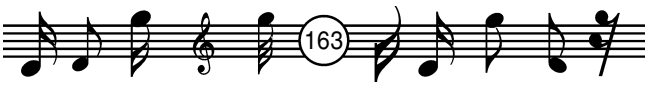

हम नवयुव युग के निर्माता

हम नवयुव युग के निर्माता
मुक्त करेंगे मानव बन्धन
(भव्य बनायेंगे मनुजभवन) ॥ध्रुवपद॥

कभी न मोह सके हैं हमको
सुख वैभव के मधु आकर्षण
तन मन को करते हैं समर्पण
महापुरुष के पथ पर निशिदिन ॥१॥

तरु बन कर हम करेंगे संवित्
जीवन यज्ञ चक्र अनुवर्तन
कण-कण में संवित् का अर्चन
यही हमारा जीवन दर्शन ॥२॥

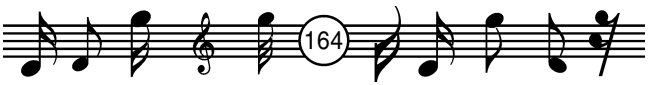

यह हिमालय से भी ऊँचा

यह हिमालय से भी ऊँचा तरु न झुकने पायेगा
(सिर न झुकने पायेगा) ॥ध्रुवपद ॥

रोक देंगे हम प्रभंजन शोषणात्मा की प्रबलता
मोड़ देगे स्वात्मघाती व्यसन की जो गरल धारा
ध्वंस डंका का बजाकर मत डराओ हे निशाचर
आज नवनिर्माण का तरुस्वर न रुकने पायेगा ॥१॥

जानते हो स्वार्थ की होली जलाकर जो चले
मानममतामोह की अर्थी सजाकर जो चले
भरत ध्रुव प्रह्लाद अभिमन्यू की जननी भूमि है
भक्ति से सींचा गया यह देशतरु हरियायेगा ॥२॥

हम प्रमादों के निशाचरपटल पर विजयी बनें
हम समाधि मंजिलों पर खेल खेल में चढ़ सकें
सत्य समता स्नेह संयम शक्ति व्यूह के बीच में
विश्वसंवित्तरुगणों का विजय-ध्वज फहरायेगा ॥३॥

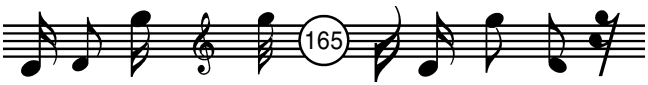

भगवद्गीता माता के

भगवद्गीता माता के
श्रीपद अनुसंधान करें ।
अर्जुन में प्रज्ज्वलित
महाप्रज्ञानल का ध्यान करें ॥ध्रुवपद ॥

व्यास-प्रसादित-शास्त्रवधू
चूडामणि का मान करें
वेदोदधिमन्थनसूता
ज्ञानसुधा का पान करें
सर्वोपनिषत्सारात्मा,
गीतामृत का पान करें ॥१॥

अष्टादशभुज-आयुध से
अहंकार संहार करें
अच्युतवाणी-नौका से
भव के पार विहार करें
गीताज्ञान विमान से
नभ के पार विहार करें ॥२॥

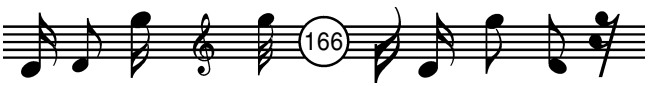

कर्मभक्ति विज्ञानमय
त्रिवेणी तीर्थ में स्नान करें
"कृतकृत्योऽहं कृष्णमयोऽहं"
इति सिद्धों का गान करें
''नष्टमोहः गत सन्देहः''
मुक्तकण्ठ से गान करें ॥३॥

संवित् साधक अर्जुन का
उर में हम आह्वान करें
संविद् गुरु हरिचरणों में
समस्त जीवनदान करें
संविद् गीता-साधन से
सकल भुवन कल्याण करें ॥४॥

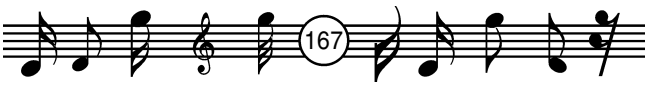

भज मन गोविन्द

भज मन गोविन्द भज मन गोविन्द,
गोविन्द भज तू मूढमते ।
अन्य समय कोई संग न जाये,
गोविन्द भज मन तू मूढमते ॥ध्रुवपद ॥

दिन और रजनी सायं प्रातः,
शिशिर बसन्त भी आते जाते ।
काल का खेल निरन्तर चलता,
फिर भी मन तू आस न त्यागे ॥१॥

जब तक कौडी पास है तेरे,
तब तक पूछे सब घर वाले ।
वृद्ध हुए कोई बात न पूछे,
सजन स्नेही भी दुत्कारे

जिसने पाठ किया गीता का,
ग्रहण किया है जल गंगा का ।
प्रेम से नाम लिया है हरि का,
कर न सके यम बाल भी बांका ॥३॥

अंग थके और बाल पके,
सब दांत गिरे और शीश झुका ।

दण्ड सहारे चलता फिरता,
फिर भी आशा धन न चुका ॥४॥

बचपन बीते खेल कूद में,
यौवन तरुणी संग बिताये ।
वृद्ध हुये तब चिन्ता खाये,
ब्रह्म तत्त्व कोई विरला पाये ॥५॥

पुनि पुनि जीना पुनि पुनि मरना,
पुनि पुनि माता गर्भ परे ।
गमनागमन न छूटे प्राणी,
केवल आश्रय कृष्ण हरे ॥६॥

आयु ढले पर रीती गागर,
सूखा नीर कहाँ का सागर ।
निर्धन का कैसा अपना घर,
ज्ञान हुआ तब नहीं भवसागर ॥७॥

कौन है तू और कहाँ से आया,
कौन है जननी कौन पिता ।
यह संसार कोरा सपना,
मिथ्या अभिलाषा ममता ॥८॥

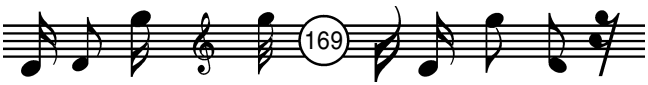

गीता पाठ सहस्त्रनाम जप,
ध्यान करे श्रीपतिहरि का ।
सज्जन संग दीन की सेवा,
करे जो नर वह प्रिय हरि का ॥९॥

जब तक सांस चले घट भीतर,
पूछताछ सब लोग करे ।
उड़ गया पंछी कैसा नाता,
गृहणी काया छुवत डरे ॥१०॥

स्नान करें गंगा सागर में,
व्रत पालन या दान करे ।
ज्ञान विहीन न मुक्ति पावे,
चाहे शत शत देह धरे ॥११॥

गुरु पद तरणी का ले सम्बल,
भव सागर से तर जा यही पल ।
इंद्रिय निग्रह कर मन निश्चल,
आनंद निधि को पा ले उज्ज्वल ।
संवित् पद को पा ले निर्मल ॥१२॥

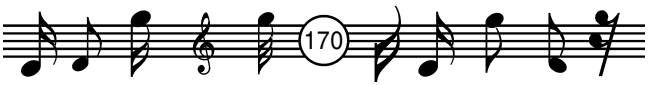

कृष्ण गोविन्द गोपाल

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
मन को विषयों के विष से हटाते चलो ॥ध्रुवपद ॥

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें
रात दिन को संयम के कोड़े लगें
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो ॥१॥

प्राण जावें मगर नाम भूलो नहीं
दुःख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो ॥२॥

नाम जपते रहो काम करते रहो
पाप की भावनाओं से बचते रहो
प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो ॥३॥

ख्याल आवेगा उसको कभी न कभी
भक्त पावेगा उसको कभी न कभी
संवित् विश्वास मन में जमाते चलो ॥४॥

तद्वज्जीव त्वं

तद्वज्जीव त्वं ब्रह्मणि तद्वज्जीव त्वम् ॥ध्रुवपद ॥

यद्वत्तोये चन्द्रद्वित्त्वम्
यद्वन्मुकु रे प्रतिबिम्बत्वम्
स्थाणौ यद्वन्नररूपत्वम्
भानुकरे यद्वत्तोयत्वम् ॥१॥

शुक्तौ यद्वद् रजतमयत्वम्
रज्जौ यद्वत् फणिदेहत्वम्
परमहंसगुरुणाद्वयविद्या
भणिता धिक्कृतमायाविद्या ॥२॥

जब नाव जल में छोड़ दी

जब नाव जल में छोड़ दी,
तूफान में ही मोड़ दी ।
दे दी चुनौति सिन्धु को,
फिर पार क्या मझधार क्या ॥१॥

जब छोड़ सुख की कामना,
प्रस्थान कर दी साधना ।
संघर्ष पथ पर बढ़ चले,
फिर फूल क्या अंगार क्या ॥२॥

मरना ही जहाँ वरदान है,
प्रिय प्राण तृण समान है ।
रण के किये प्रस्थान है,
फिर जीत क्या और हार क्या ॥३॥

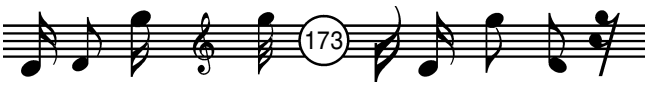

उड़ान ही विहंग काम है,
पवनों पर की विश्राम है ।
आकाश ही निज धाम है,
फिर पास क्या और दूर क्या ॥४॥

संसार का पी पी गरल,
मन को किया संवित् सरल ।
जब शंकर रूप हो गये
फिर राख क्या श्रृंगार क्या ॥५॥

गात्र वीणा नाद से

गात्रवीणा नाद से निज जीवन
झंकृत आनन्द -भरित करो मन ॥ध्रुवपद ॥

मात्र गुरु-भक्ति के आलम्बन
भाव तन्त्रि-चालन सुनिपुण बन ॥१॥

षट्त्रिंशत् - भुवनकला - मालिनी पद
हृत्पद्म पीठ में ध्यान करो नित ।
षट्चक्र - उपसंक्रमणात्म - गीत
संविद्रसामृत पोषित पुलकित ॥२॥

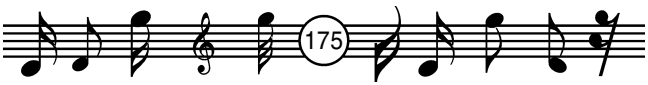

चिन्ता नहि नहि रे मन

चिन्ता नहि नहि रे रे रे मन ॥ध्रुवपद॥

शमदमकरुणा – संपूर्णानाम्
साधुसमागम – संकीर्तानाम् ॥१॥

कालत्रयजित कन्दर्पाणाम्
खंडितसर्वेन्द्रिय – दर्पाणाम्
परमहंसगुरु पदचित्तानाम्
ब्रह्मानन्दामृत – मत्तानाम् ॥२॥

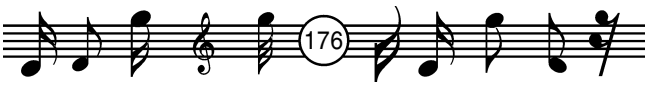

शत शत दीप जले

शत शत दीप जले संवित् प्रदीप जले ॥ध्रुवपद ॥

आभामय संध्या के तट पर
ढलता सूरज उगते तारे ।
ऋत विराट के उन्नत पद का
मंगलमय नीराजन करने
संधि जानकर सांध्य गान कर
श्रद्धामय आराधन करने ॥
शत शत दीप जले धर्म प्रदीप जले ॥१॥

गहन तिमिरमय अनन्त पथ पर
एक पथिक गाता जाता है
उज्ज्वल चरण चिन्ह अंकित कर
तन्मयता उद्भासित करने
प्रीति दान कर, लय विधान कर
ज्योतिर्मय आलोकन करने ।
शत शत दीप जले भक्ति प्रदीप जले ॥२॥

महामौन के धवल शिखर पर
विमर्श उन्मुख स्वात्म स्रोत में
एक प्रसव पीड़ा पलती है
सर्जन लय की क्रीड़ा करने
ज्योति पान कर, दिव्य ध्यान कर
संविन्मय अरुणोदय करने ।
शत शत दीप जले ज्ञान प्रदीप जले ॥३॥

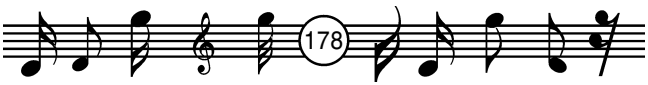

प्रज्ज्वलित करो

प्रज्ज्वलित करो संवित् प्रदीप ॥ध्रुवपद ॥

विशाल विशुद्ध कर उर अन्तर
विश्व भ्रातृता भाव स्नेह भर
प्रज्ज्वलित करो धर्म प्रदीप
संस्कृत जीवन सत्र प्रदीप ॥१॥

एकाग्र वृत्ति में संयोजित
ऐक्य प्रज्ञानल संबोधित
प्रज्ज्वलित करो ज्ञान प्रदीप
सज्जित जीवन मंच प्रदीप ॥२॥

अग्निगर्भिणी धरापात्र में
अर्कदीप्तियुत सोम सूत्र में
प्रज्ज्वलित करो विश्व प्रदीप
विराट जीवन नृत्य प्रदीप ॥३॥

द्वैतविवर्जित शिवात्मदर्शन
दर्शाता गुरुमणिमय दर्पण
प्रज्ज्वलित करो ब्रह्मप्रदीप
समरस जीवन साक्षी प्रदीप ॥४॥

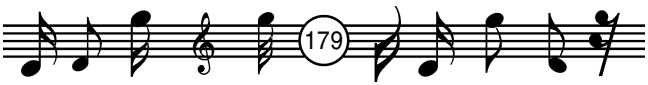

उपसंहार भजन

आनन्द लोके

आनन्द लोके, मंगलालोके,
विराजो! सत्य सुन्दर! (संवित् सुन्दर) ॥ध्रुव ॥

महिमा तव उद्भासित महागगन मुकुरे
विश्वमात्र मणिभूषण वेष्टित चरणे ॥आनन्द॥

ग्रहतारक चन्द्रतपन व्याकुल द्रुत वेगे
करते पान, करते स्नान अक्षय किरणे ॥आनन्द॥

बहे जीवन रजनी दिन चिर नूतन धारा
करुणा तव निष्कारण जनमें मरणे ॥आनन्द॥

स्नेह प्रेम दया भक्ति कोमल करे प्राण
करे सान्त्वन करे वर्षण सन्तापहरणे ॥आनन्द॥

महिमायुत मंगलकर बने विश्व सारा
श्री सम्पद संविन्मय निर्भय शरणे ॥आनन्द॥

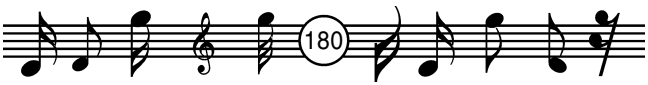

कोटि कोटि शत प्रणाम तुमको

कोटि कोटि शत प्रणाम तुमको
गुरुवर मुद मंगल दाता ।
त्रास विभंजक जन मन रंजक
मानव धर्म पतन त्राता ॥ध्रुवपद ॥

हे तमारि ! मम हृदय कुंज के
तिमिर पुंज संहार करो ।
हे अघारि ! मानस सर में
अनुराग पद्म विस्तार करो ॥१॥

संवित् देशिक ! दयाम्बुदात्मक
मन मयूर को हर्षाओ ।
सुमन सुमन को भाव वारि से
सींच सींच कर सरसाओ ॥२॥

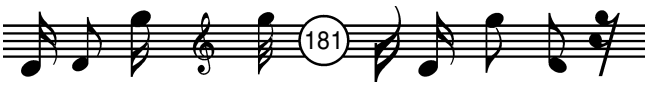

हे पीयूषधर ! सुधा बिन्दु मम
कर्ण-कुहर में द्रवित करो ।
विबुधवरी भव शमनकरी
श्रुतिसार धार को स्रवित करो ॥३॥

शिवि-दधीचि सम त्यागी हम सब
तव प्रभाव से बन जावें ।
गुरु संवित् पद पद्म पुंज में
नतमस्तक हो गुण गावें ॥४॥

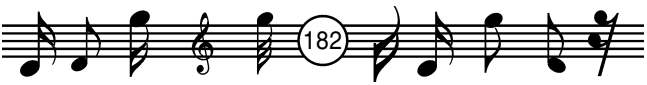

जय गुरुदेव दयानिधि

जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी
जय जय मोह विनाशक, भव बन्धनहारी
ॐ जय जय जय गुरुदेव ॥ ॐ जय जय॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरत प्यारी
वेद पुराण बखानन, गुरु महिमा भारी
॥ ॐ जय जय॥

जप तप तीरथ संयम, दान विविध कीजे
गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि यतन कीजे
॥ ॐ जय जय॥

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे
नाम जहाज बिठा कर, गुरु पल में तारे
॥ ॐ जय जय॥

काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे
ज्ञान खड्‌ दे कर में, गुरु सब संहारे
॥ ॐ जय जय॥

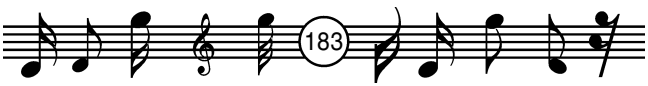

नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावें
सबका सारा बता कर, गुरु मारग लावे
॥ ॐ जय जय॥

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी
वचन सुनत तम नाशे, सब संशय हारी
॥ ॐ जय जय॥

तन मन धन सब अर्पण गुरु चरणन कीजे
ब्रह्मानन्द परम पद संवित् गति लीजे
॥ ॐ जय जय॥

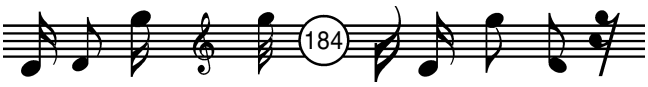

अन्तर मम विकसित करो

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे ।
निर्मल करो उज्ज्वल करो सुन्दर करो हे ॥ध्रुव॥

जाग्रत करो उद्यत करो निर्भय करो हे ।
मंगल करो निरलस निःसंशय करो हे ॥१॥

युक्त करो विश्व के संग मुक्त सर्व बन्धन ।
सकल कर्म स्वीकरो हे संविन्मय अर्चन ॥२॥

चरणकमल में मन निष्पन्दित करो हे ।
नन्दित करो, नन्दित आनन्दित करो हे ॥३॥

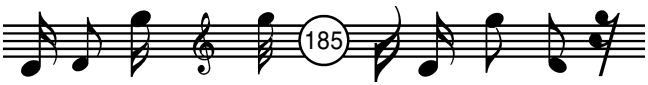

ध्यान श्लोक

कीर्तन प्रारंभ करने पूर्व उसी राग में उसी देवता संबंधी या कीर्तनविषयसंबंधी श्लोक का मंगलाचरण रूप से प्रयोग किया जाता है । इस हेतु कुछ श्लोक यहाँ दिये जाते हैं ।

पूर्णब्रह्मस्वरूपोसि गणाध्यक्ष विनायक ।
पार्वतीमुखपद्मार्क पाहि पाहि गजानन ॥१॥

पाशांकुशं च लेखनीं पुस्तकं बिभ्रतं करे ।
विघ्नभग्नकरं देवं विद्यागणपतिं भजे ॥ ॥२॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
गुरोः परतरं नास्ति श्रीगुरुः शरणं मम ॥३॥

संविद्रूपाय शान्ताय सर्वविद्याप्रदायिने ।
सच्चिदानन्द रूपाय शिवाय गुरवे नमः ॥४॥

वन्दे गुरुणां चरणारविन्दे,
सन्दर्शित -स्वात्म - सुखावबोधे ।

जनस्य ये जांगलिकायमाने
संसार - हालाहल -मोहशान्त्यै ॥५॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥६॥

नमो वेदान्त-सूर्याय विश्वैकात्म्यावभासिने ।
भुवनैकगुरुवे श्रीशंकराचार्य-मूर्तये ॥७॥

पंचास्य पंचभूतेश पंचकृत्यपरायण ।
पाहि नः परमेशान भक्तपापविनाशन ॥८॥

मृत्युंजय जय स्वामिन् त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक ।
महादेव महादेव त्राहि मां शरणागतम् ॥९॥

शरद्राकां शशिनिभां संविदानन्दरूपिणीम् ।
स्मरामि भव-संताप-हरां सोमेश्वर प्रियाम् ॥१०॥

आराधयामि संवित्तिं बहिरन्तर्विलासिनीम्
आनन्दवर्षिणीमम्बां भावनैकबलिप्रियाम् ॥११॥

अग्निसूर्यसुधांशूनां संविज्ज्योतिस्वरूपिणि ।
अर्बुदापद्विभंजनी जयन्ती शिवरंजनी ॥१२॥

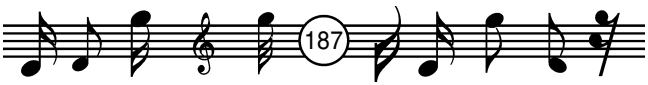

भारते सर्वशः स्थिते पंचाशत् पीठरूपिणि ।
कृपां कुरु गुहावासे ह्यर्बुदे जगदम्बिके ॥१३॥

श्रीमाता श्रीमहादेवी कात्यायनीति संस्तुता ।
श्रीमदर्बुदशैलस्था सदा विजयतेतराम् ॥१४॥

पापापहारिणीं चण्डीं सर्वदैत्यविदारिणीम् ।
श्रीदुर्गां दुर्गमां देवीं वन्दे दुर्गतितारिणीम् ॥१५॥

पद्मनाभमुखपद्मान्निः सृतां मृत्युघातिनीम् ।
पुण्यां पुमर्थदा सेवे गीता-बोधसुधानिधिम् ॥१६॥

अंसालम्बित-वामकुंडलधरं मन्दोन्नतं भ्रूलतं
किंचित् कुंचित कोमलाधरपुटं साचित्प्रसारेक्षणम् ।

आलोलांगुलिपल्लवैः मुरलिकामापूरयन्तं मुदा
मूले कल्पतरोः त्रिभंगललितं ध्यायेज्जगन्मोहनम् ॥१७॥

अत्यन्तबालमतसी कुसमप्रकाशं
दिग्वाससं कनकभूषणभूषितांगम् ।
विस्रस्तकेशं अरुणाधरं आयताक्षं
कृष्णं नमामि मनसा वसुदेवसूनुम् ॥१८॥

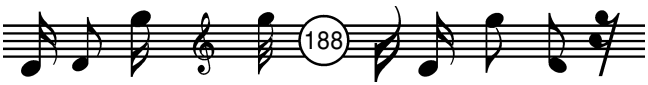

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥१९॥

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामांके जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥२१॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमो नमः ॥२२॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२३॥

हनुमन्नंजनीसूनो रामदूत महाबल ।
रुद्रावतार संसारात् त्राहि मां मरुतात्मज ॥२४॥

❖ ❖ ❖

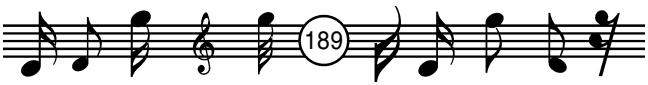

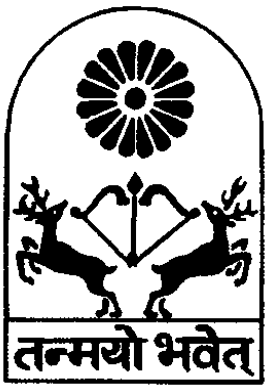

Published by:

SAMVIT SADHANAYANA

Santsarovara, Mount Abu